Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-20
कल्पादि सम्वत् 1972949117
सम्पादक मुन्ना कुमार शर्मा
दिनांक 09 अगस्त से 15 अगस्त 2017 तक
भाद्रपद कृष्ण द्वितीया से भाद्रपद कृष्ण अष्टमी सम्वत् 2074 तक
वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

छिन सकता है विश्व... पृष्ठ- 3
भरपूर नीद लें, तनाव.. पृष्ठ- 4
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी.. पृष्ठ- 5
हिन्दू अस्तित्व, संकट... पृष्ठ- 8
भोजन जानवरो.... पृष्ठ- 12

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनायें

महाभारत के महानायक और कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिवस जन्माष्टमी पर्व पर आप सभी को कोटिश: मंगल कामनायें।

चन्द्रप्रकाश कौशिक (राष्ट्रीय अध्यक्ष) — मुन्ना कुमार शर्मा (राष्ट्रीय महासचिव) — वीरेश त्यागी (राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री)

चीन ने बढ़ाई भारत-अमेरिका की चिंता

चीन की विस्तारवादी गतिविधियों को रोका जाये –हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

चीन ने पीएलए कर्मियों को हिंद महासागर के सामरिक महत्व वाले क्षेत्र जिबौती स्थित अपने सैन्य अड्डे पर भेजा है। चीन का विदेश स्थित यह प्रथम सैन्य अड्डा है, उसके इस कदम से भारत और अमेरिका की चिंता बढ़ सकती है। दरअसल चीन द्वारा विदेशों में बनाया जा रहा यह प्रथम सैन्य अड्डा है। दूसरा अड्डा पाकिस्तान के ग्वादर में बनाया जा रहा। इसके अलावा चीन की योजना श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह को भी शेष पृष्ठ 10 पर

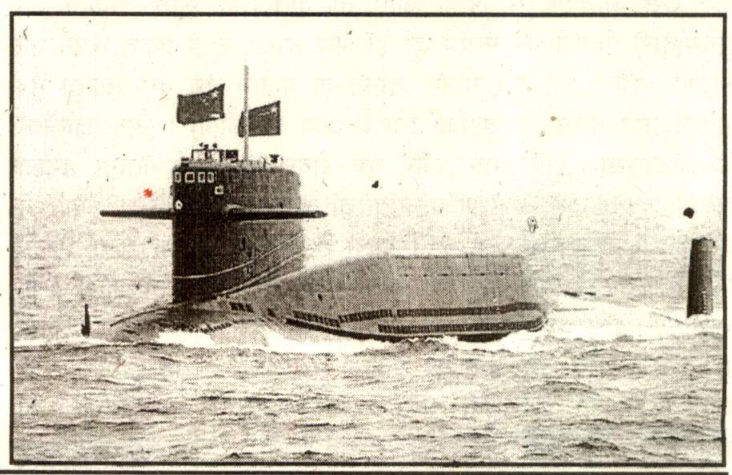

तमिलनाडु, जम्मू-कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल की हिन्दू विरोधी सरकारों को बर्खास्त किया जाये-हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

अखिल भारत हिन्दू महासभा ने नई दिल्ली स्थित जंतर–मंतर पर तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम–बंगाल सरकारों की हिन्दू विरोधी एवं राष्ट्रविरोधी नीतियों के विरोध में विशाल धरना–प्रर्दशन का आयोजन किया एवं तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल की हिन्दू विरोधी प्रदेश सरकारों को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने से संबंधित मांगों का ज्ञापन भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री को सौंपा। धरना–प्रर्दशन में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी, तमिलनाडु प्रदेशाध्यक्ष के. राजशेखर, दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष सुनील कुमार, एस. तुलकापियन, वीजीधनलक्ष्मी, कुमुदाश्रीधरन, परमशिवम, विजय कुमार सहित सैंकडों हिन्दू महासभा कार्यकर्ता उपस्थित थे। सर्वप्रथम सैकडों हिन्दू महासभा कार्यकर्ता नारे लगाते हुए जंतर–मंतर पंहुचे। तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल सरकार को बर्खास्त करो, राष्ट्रपति शासन लागू करो। हिन्दू विरोधी गतिविधियों को बंद करो आदि नारे लगाये गये। अपने संबोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने कहा कि कुछ प्रदेशों में आई.एस की गतिविधियाँ बढ़ गई हैं। वहां राष्ट्र विरोधी कार्य हो रहे हैं। इसे तत्काल रोकने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने केन्द्र सरकार से तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल शेष पृष्ठ 11 पर

मनुष्य के हृदय को शुद्ध करता है–'धर्म'

आज स्वार्थवृत्ति इतनी अधिक बढ़ गई है कि अपने सामान्य स्वार्थ के लिए भी व्यक्ति अन्य जीवों के प्राण ले लेता है। साँप ने नहीं काटा हो तो भी 'यह विषैला प्राणी है, कदाचित् काट लेगा', इस भय से उसे मार दिया जाता है। आज स्वार्थी मनुष्य जितना हिंसक व क्रूर बन गया है, उतने हिंसक व क्रूर तो हिंसक व विषैले प्राणी भी नहीं हैं। साँप विषैला होने पर भी उस साँप से मदारी अपनी आजीविका चलाता है। सिंह, बाघ, चीता आदि हिंसक होने पर भी सर्कस वाले उनसे अपनी कमाई करते हैं। इस दृष्टि से वे विषैले और हिंसक प्राणी भी मनुष्य की कमाई कराने में सहायक बनते हैं, जबकि अति स्वार्थी मनुष्य किसी का सहायक नहीं बनता, बल्कि वह तो अनेकों का बुरा ही करता है।

'साँप काट लेगा', इस भय से साँप को मारने वाला क्या कम विषैला है? साँप के तो दाँत में जहर होता है, जबकि स्वार्थी मनुष्य के हृदय में जहर होता है। ज्ञानियों द्वारा निर्दिष्ट हिताहित का विवेक जिसमें नहीं है, ऐसा व्यक्ति अपना विरोध करने वालों को क्या–क्या नुकसान नहीं पहुँचाता है? सरकारी सजा के भय से स्वार्थी मनुष्य भले ही शान्ति रखता हो, परन्तु उसके हृदय में तो इतना भयंकर जहर होता है कि वह अपने स्वार्थ के लिए सामने वाले का खून भी कर सकता है। मनुष्य के हृदय के जहर को दूर करने का काम धर्म करता है। जिसके हृदय में धर्म का प्रवेश होता है, उसके हृदय में से जहर दूर हो जाता है। आज मनुष्य के हृदय में इतना जहर उछल रहा है कि जिसके कारण संहार के साधन बढ़ रहे हैं। आज मानव, मानवता छोड़ रहा है। अपने स्वार्थ में बाधक बनने वाले का संहार किया जाता है। देश में यह मनोवृत्ति नहीं होनी चाहिए, परन्तु आज वातावरण बिगड़ रहा है।

यह भाव भोग के लिए नहीं, त्याग के लिए है। यह ख्याल आए और उसे आचरण में लाया जाए तो वातावरण सुधर सकता है। दुनियादारी पदार्थों की ममता दूर हो और आत्म–सुख प्रकट करने की कामना उत्पन्न हो, तब मानव, दानव के बजाय देव बन सकता है। आपको क्या बनना है, इसका निर्णय आप ही कीजए। 'अनंतज्ञानियों की आज्ञानुसार पाप–त्याग और धर्म–सेवन का मार्ग बताना हमारा काम है, परन्तु उसे आचरण में लाना तो आपके हाथ में है न?' पाप से उपार्जित सभी वस्तुएँ यहीं रहने वाली हैं और पाप साथ चलने वाला है, यदि ऐसा विश्वास हो तो पाप से बचने के लिए प्रयत्नशील बनो, स्वार्थी मनोवृत्ति का त्याग करो। स्वार्थ पाप कराता है, 'पाप से दुःख और धर्म से सुख', इस बात पर आपको विश्वास है, इसलिए सीधी बात करता हूँ कि पाप छोड़ो और धर्म का सेवन करो, जिससे आपका दुःख चला जाए और सुख प्राप्त हो।

संजय जैन

मोह त्याग, कर्तव्य करो

धर्मनीति धारण करो, मदद करे भगवान।
अधर्म पथ पर जो चले, भाग्यहीन इनसान।।
भौतिकवादी, विषयी जीव, कभी नहीं सुख पाय।
कपट रहित, कर्तव्यरत, सज्जन प्रभु को भाय।।
काम क्रोध और लोभ ये, तीन नरक के द्वार।
इनसे दूरी रखने पर, खुले स्वर्ग के द्वार।।
संग्रह की इच्छा प्रबल, यही लोभ का रूप।
भोग, वासना, चाहना, काम के असली रूप।।
संग्रह एवं भोग में, बाधा जब तब आय।
क्रोध उपजे हृदय में, बुद्धि भ्रमित हो जाय।।
खुद में अच्छाई दिखे, औरों में सब दोष।
ऐसे जन अभिमानवश, खो देते है होश।।
धर्मशील इनसान का, मन अति निर्मल होय।
निर्विकारी व्यक्ति की, बुद्धि सात्विक होय।।
होनहार का रोकना, नहीं मनुष्य के हाथ।
कर्तव्य की पालना, अवश्य बस की बात।।
इसीलिये भगवान ने दी अर्जुन को सीख।
मोह त्याग कर्तव्य करो, यही बात ''हरि'' ठीक।।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह व्यवसाय व कार्यक्षेत्र में शक्ति व वर्चस्व की स्थिति कायम होगी। निराशा दूर होगी तथा नये तरीकों से कार्यो में प्रगति होगी। शारीरिक समस्यायें घेरे रह सकती है। आफिस के कार्यो के लेकर अधीरता की स्थिति से गुजरेंगे।

वृष : इस सप्ताह कुछ लोगों को कार्य व व्यवसाय में महत्वपूर्ण फैसले लेने पड़ सकते है, जो आपके हित में साबित होंगे। आर्थिक मामलों में सूझबूझ से लिये गये निर्णय के फलस्वरूप अच्छे परिणाम मिल सकते है। लम्बे समय से चला आ रहा गतिरोध दूर हो सकता है।

मिथुन : इस सप्ताह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन के संकेत नजर आ रहें है। लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करे, समय–समय पर अधीरता की स्थिति बनेगी और हानि भी उठानी पड़ सकती है, अतः सावधानी अपेक्षित है।

कर्क - इस सप्ताह भौतिक संसाधनों पर अत्यधिक व्यय रहेगा जिससे आप थोड़ा सा चिन्तित रह सकते हैं। व्यवसायी वर्ग के लिए धन का निवेश करना इस समय उचित नहीं है। मित्रों को शत्रु न बनाये अन्यथा धन की हानि होने की सम्भावना है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होंगे।

सिंह - कार्य व्यापार में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति में मजबूत आयेगी। जो लोग नौकरी करते हैं उनके लिए कुछ अच्छे लाभ के योग बनते हैं। छोटी मोटी यात्राएं भी हो सकती है। पद प्रतिष्ठा आदि का लाभ होगा। व्यापारी वर्ग को अच्छे लाभ के योग है।

कन्या - इस सप्ताह आपके मन में कुछ ऐसे विचार आयेंगे जिससे कि आप कुछ बड़ा परिवर्तन करने को लालयित रहेंगे। संसाधनों का सद्प्रयोग करके आप–अपने समय की बचत करके बहुत कुछ कर सकते हैं। इस समय आपके शत्रुओं की संख्या में भी बढ़ोतरी होगी।

तुला : यह सप्ताह आपके लिए सुखदायी रहेगा। आप लोगों का विश्वास जीतेंगे और आपकी प्रभुता बढ़ेगी। कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते है। कार्य क्षेत्र में मान–सम्मान की वृद्धि होगी। कार्य की अधिकता के कारण जीवन साथी से तीखी–मीठी नोक–झोक हो सकती है।

वृश्चिक : इस सप्ताह ऑफिस के साथी आपकी हर समस्या का समाधान खोजने में मदद करेंगे। घर–गृहस्थी में सामान्य माहौल बना रहेगा। अधिकारियों तथा प्रतिद्वंद्वियों से कड़ी चुनौती मिलने की सम्भावना नजर आ रही है। विपरीत परिस्थितिय आप पर हावी हो सकती है।

धनु : इस सप्ताह आप संयमित होकर कार्य करे। आप विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम है। व्यक्तिगत व व्यवसायिक क्षेत्र में रिस्क लेने से लाभ मिलेगा। ब धायें स्वतः दूर हो जायेगी। अतः जल्दबाजी न करें।

मकर : इस सप्ताह कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। कुछ लोगों का जीवन साथी से टकराव हो सकता है। समाज के लोगों को आपसे बड़ी अपेक्षायें रहेंगी। संयमित होकर कार्य करें अन्यथा आपकी विश्वसनीयता भंग हो सकती है।

कुम्भ : इस सप्ताह आप कठिन लक्ष्य की ओर उन्मुख होंगे। आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी। निरर्थक कार्यो में धन व्यय करने से बचे। निराशा आपको सीख देगी। जिम्मेदारियों का बोझ और बढ़ सकता है। अपने हितैसी लोगों की उपेक्षा कतई न करें।

मीन : इस सप्ताह कुछ लोगों के मन में अतीत घटनायें हावी रह सकती है। आप जड़वत व अवसादग्रस्त महसूस करेंगे। जिम्मेदारियों के प्रति मन में उदासीनता के भाव बने रहेंगे। कार्य क्षेत्र में स्थितिय सामान्य बनी रहेगी।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णंसगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।।

संजय बोले–केशवभगवान् के इस वचन को सुनकर मुकुटधारी अर्जुन हाथ जोड़कर काँपता हुआ नमस्कार करके, फिर भी अत्यन्त भयभीत होकर प्रणाम करके भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति गद्गद वाणी से बोले–।।३५।।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङघाः।।

अर्जुन बोले–हे अन्तर्यामिन्! यह योग्य ही है कि आपके नाम, गुण और प्रभाव के कीर्तन से जगत् अति हर्षित हो रहा है और अनुराग को भी प्राप्त हो रहा है तथा भयभीत राक्षसलोग दिशाओं में भाग रहे हैं और सब सिद्धगणों के समुदाय नमस्कार कर रहे हैं।।३६।।

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीय से ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्।।

हे महात्मन्! ब्रह्मा के भी आदिकर्ता और सबसे बड़े आपके लिये वे कैसे नमस्कार न करें, क्योंकि हे अनन्त! हे देवेश! हे जगन्निवास! जो सत्, असत् और उनसे परे अक्षर अर्थात् सच्चिदानन्दघन ब्रह्म है, वह आप ही हैं।।३७।।

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया तर्त विश्वमनन्तरूप।।

आप आदिदेव और सनातन पुरुष हैं, आप इस जगत् के परम आश्रय और जानने वाले तथा जानने–योग्य और परम धाम हैं। हे अनन्तरूप! आपसे यह सब जगत् व्याप्त अर्थात् परिपूर्ण है।।३८।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 09 अगस्त से 15 अगस्त 2017 तक

अध्यक्षीय

छिन सकता है विश्वगुरू का ताज

विश्वगुरू होने और आगे भी बने रहने का दंभ पाले भारतीयों को यह सुनकर बुरा लग सकता है कि हमारे देश में शिक्षा के लिए किस कदर उपेक्षा का भाव घर कर चुका है और इसकी प्रमुख वजह है राजनीति। क्योंकि नेताओं के लिए यह जिम्मेदारी से अधिक राजनीतिक लाभ और हानि का मामला बन गया है। हाल ही में तीन घटनाएं ऐसी हुई हैं, जो इस बात के समर्थन में बतौर दलील पेश की जा सकती हैं। पहली खबर है कि एनसीईआरटी की किताबों से गालिब और टैगोर को हटाने का सुझाव दिया गया है। दूसरी खबर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति जगदीश कुमार द्वारा परिसर में टैंक लगाने की मांग पर है और तीसरी खबर कैग की रिपोर्ट से निकली है। जिसके मुताबिक सरकारी स्कूलों में नामांकन घट रहे हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने हाल ही में आम जनता से पाठ्य पुस्तकों में बदलाव से जुड़े सुझाव मांगे थे, जिस पर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने पांच पन्ने में कई सुझाव भेजे। इंग्लिश, उर्दू और अरबी शब्द पाठय पुस्तकों से हटाएं जाएं। क्रांतिकारी कवि पाश की एक कविता, मिर्जा गालिब की शायरी और रविंद्रनाथ टैगोर के विचारों को भी हटाया जाए। एकपुस्तक में हिन्दी की यह बताया जाए कि अमीर खुसरो हिन्दू और मुसलमानों के बीच विभेद बढ़ाया था। इसी तरह के कई और सुझाव एनसीईआरटी को भेजे गए हैं। दीनानाथ बत्रा इस न्यास के प्रमुख हैं, जिन्होंने कुछ समय पहले इसी तरह के बदलाव पाठयक्रम में चाहे थे। यह विचारणीय है कि इन सुझावों को अगर लागू किया गया तो इसका देश की भावी पीढ़ी पर क्या असर पड़ेगा और एकता में अनेकता वाली हमारी खास पहचान को किस कदर धक्का लगेगा। क्या भाषायी तौर पर कूपमंडूक बनना हमारे देश के लिए हितकारी होगा, पाश ने लिखा था कि सबसे खतरनाक होता है सपनों का मर जाना, तो क्या हम बच्चों की आंखों से सपने छीन लेना चाहते हैं। गालिब से हमारी साहित्यिक विरासत कितनी समृद्ध हुई है, यह अलग से बताने की आवश्यकता नहीं है। अगर उनका परिचय हम नयी पीढ़ी से नहीं कराएंगे तो क्या यह उन्हें ऐतिहासिक गौरव से वंचित करना नहींहोगा। साहित्य के लिए नोबेल सम्मान पाने वाले रवीन्द्रनाथ टैगोर तो कवि कुलगुरु कहलाते हैं, वे असल मायनों में विश्व नागरिक थे और शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रयोगों से शांति निकेतन जैसी संस्था की स्थापना हुई। जहां भारत की अनेक गौरवशाली हस्तियों ने पठन–पाठन किया। आज हम शान से जिस राष्ट्रगान को गाते हैं, वह भी टैगोर का ही लिखा है। फिर टैगोर इतने असुविधाजनक क्यों हो रहे हैं कि उन्हें पाठ्यक्रम से हटाने की मांग हो रही है। इन तमाम बिंदुओं पर खुले दिल–दिमाग से विचार की जरूरत है। देश की प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थाओं में से एक जेएनयू में कुलपति महोदय ने कारगिल विजय दिवस के आयोजन पर एक मांग रखी कि विश्वविद्यालय परिसर में टैंक लगाया जाए। उनके मुताबिक हमारे पूर्व छात्रों द्वारा दिए गए बलिदान को पहचान दिलाने के लिए टैंक की मांग की गई थी। जेएनयू सेना के तीनों अंगों थल सेना, नौसेना और वायु सेना के कैडेटों को डिग्री जारी करता है। आखिरी बात जो हमें विश्वगुरु होने के मार्ग से कोसों दूर ले जाती है। शिक्षा का अधिकार कानून इस उम्मीद के साथ लाया गया था कि इससे देश के हर बच्चे को बिना किसी भेदभाव के पढने का अवसर मिलेगा। आखिरकार शिक्षा ही हमारे लिए संभावनाओं के द्वार खोलती है और इससे वंचना किसी व्यक्ति को ही नहीं, देश को भी कमजोर करती है। लेकिन कैग की रिपोर्ट के मुताबिक राज्य सरकारें इस कानून के लागू होने के बाद के छह सालों में उपलब्ध कराए गए कुल फंड में से ८७ ००० करोड़ रुपये का इस्तेमाल ही नहीं कर पाई हैं। अर्थात जनता से कर वसूलने के बाद उससे शिक्षा के लिए बजट में दिया तो जा रहा है, लेकिन खर्च नहीं हो रहा है। तो फिर इतना धन किस तिजोरी में जमा किया जा रहा है। कैग की ही एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार सरकारी स्कूलों में वर्ष २०१०–११ में कुल नामांकन १ करोड़ ११ लाख था, जो २०१४–१५ में ६२ लाख ५१ हजार रह गया है। जबकि निजी स्कूलों में छात्रों की संख्या २०११–१२ से २०१४–१५ के बीच ३८ प्रतिशत बढ़ी है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत में गरीबों के लिए पढने के अवसर खत्म हो रहे हैं और केवल वही शिक्षा के पात्र बन रहे हैं, जो मनमानी फीस भरने की क्षमता रखते हैं। क्या अब भी यह कहने में संकोच होना चाहिए कि शिक्षा के साथ खिलवाड़ कर पूरे देश के भविष्य को खतरे में डाला जा रहा है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

अभी भी जमीन से जुड़े हुए हैं रामनाथ कोविंद

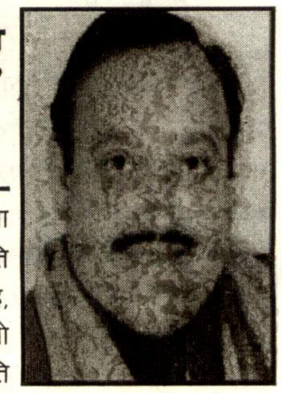

श्री रामनाथ कोविंद का भारत का १४वां राष्ट्रपति चुना जाना अपने आप में एक एतिहासिक घटना है। अब तक जो १३ राष्ट्रपति चुने गए, उनमें से कई लोग पहले उप–राष्ट्रपति रहे, केंद्रीय मंत्री रहे, मुख्यमंत्री रहे, कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और राज्यपाल भी रहे। राज्यपाल तो कोविंद भी रहे लेकिन दो साल से भी कम। जब उनका नाम राष्ट्रपति पद के लिए घोषित हुआ, तब लोगों को जिज्ञासा हुई कि यह कोविंद कौन हैं। जो व्यक्ति ३०–३५ साल से देश की एक प्रमुख पार्टी भाजपा में सक्रिय रहा हो, दो बार राज्यसभा का सदस्य रहा हो, उसके दलित मोर्चे का अध्यक्ष रहा हो, वह इतना प्रचार–परांगमुख और आत्मगोपी हो कि लोगों को पूछना पड़े कि वह कौन है, यही प्रश्न एक बड़े प्रश्न को जन्म देता है कि रामनाथ कोविंद कैसे राष्ट्रपति होंगे। इसमें शक नहीं कि कोविंद ऐसे समय में राष्ट्रपति बन रहे हैं, जो अपने ढंग का अनूठा है। ३० साल में यह पहली सरकार है जो स्पष्ट बहुमत से बनी है। पिछले तीन साल में देश में जो राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री रहे हैं, वे दोनों परस्पर विरोधी दलों के हैं लेकिन इसके बावजूद उनमें न तो ऐसी कोई अप्रियता हुई। जैसी कि हिंदू कोड बिल और सोमनाथ मंदिर को लेकर डॉ० राजेंद्र प्रसाद और जवाहरलाल नेहरु के बीच हुई थी या १९६२ के भारत–चीन युद्ध के बाद डॉ० राधाकृष्णन और नेहरु या पोस्टल बिल को लेकर ज्ञानी जैल सिंह और राजीव गांधी के बीच हुई थी। देश को उम्मीद ही नहीं पूरा विश्वास है कि कोविंद के राष्ट्रपति रहते हुए विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में उचित तालमेल रहेगा। कोविंद को राष्ट्रपति बनाने के पीछे कारण ढूंढते हुए कई विश्लेषकों का मानना है कि नरेंद्र मोदी को इस पद के लिए ऐसे व्यक्ति की तलाश थी, जो रबर का ठप्पा सिद्ध हो, जो सरकार के हर निर्णय पर सहमति की मुहर लगा दे। यह बात किस प्रधानमंत्री के लिए सत्य नहीं होगी। कौन प्रधानमंत्री यह चाहेगा कि किसी विघ्नसंतोषी को राष्ट्रपति बना दिया जाए। संभवतः इसी कारण श्री लालकृष्ण आडवाणी और डॉ० मुरली मनोहर जोशी को मौका नहीं मिला। यों भी आपातकाल के बाद अब तक संवैधानिक प्रावधान के मुताबिक राष्ट्रपति के स्वविवेक के अधिकार को काफी सीमित कर दिया गया है। मंत्रिमंडल के निर्णय पर राष्ट्रपति को आखिरकार मुहर लगानी ही होती है। जहां तक रामनाथ कोविंद का प्रश्न है, वे दलित और ग्रामीण परिवार में पैदा जरूर हुए हैं लेकिन वे प्रतिभावान और चरित्रवान छात्र रहे हैं। उन्होंने वकालत की परीक्षाएं पास की हैं और वे सर्वोच्च न्यायालय में वकालत करते रहे हैं। उन्हें संविधान और कानून की पेचीदगियों का ज्ञान सामान्य नेताओं से कहीं ज्यादा है। वे कोई भी फैसला करते वक्त अपनी इस योग्यता और अनुभव को दरकिनार नहीं होने देंगे। भाजपा के सक्रिय सदस्य बनने के पहले वे अनेक बड़े नेताओं के सहयोगी की तरह भी काम कर चुके हैं। उन नेताओं में प्रमुख पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई भी हैं। कोविंद को सिर्फ उत्तर प्रदेश और हिंदी राज्यों में नहीं, देश के लगभग सभी प्रांतों में कई विरोधियों के भी वोट मिले हैं। कांग्रेस ने दलित कार्ड खेला, मीरा कुमार को कोविंद के खिलाफ खड़ा कर दिया लेकिन इसके बावजूद उन्हें ६६ प्रतिशत और मीरा कुमार को ३४ प्रतिशत ही वोट मिले। मीरा कुमार खुद अत्यंत योग्य महिला हैं और बाबू जग जीवनराम की बेटी हैं, इसके बावजूद कोविंद को इतने वोट इसीलिए मिल गए कि उनके बारे में कोई निषेधात्मक बात सामने नहीं आई। उससे यही आशा की जाती है कि वह भी राष्ट्रपति के रूप में देश की सेवा कृतज्ञतापूर्वक करेगा। अब वे किसी जाति–विशेष, वर्ग–विशेष, प्रांत विशेष के नहीं, संपूर्ण राष्ट्र के प्रतिनिधि हैं। उन्होंने कहा भी है कि उनकी जीत उन सबकी जीत है, जो अपने कर्तव्य का पालन ईमानदारी से करते हैं। बिहार के राज्यपाल के तौर पर उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को कैसे सम्मोहित कर लिया था, यह बात मुझे नीतीशजी ने कुछ माह पहले पटना में उनसे हुई मेरी भेंट में मुझे बताई थी। मैं उम्मीद करता हूं कि राष्ट्रपति के तौर पर कोविंद भी देश के सभी राजनीतिक दलों के साथ ऐसा ही निष्पक्ष व्यवहार करेंगे। कोविंदजी स्वभाव से इतने निश्छल और पारदर्शी हैं कि अपने संवैधानिक दायित्वों को निभाने में वे कोई कोताही नहीं करेंगे। संवैधानिक मयार्दाओं का वे पालन अवश्य करेंगे लेकिन उनका जागृत विवेक और अनासक्त व्यक्तित्व उन्हें कभी भी रबर का ठप्पा नहीं बनने देगा। यह सरकार, जिसने उन्हें राष्ट्रपति बनाया है। इसका कार्यकाल दो साल बाद पूर हो जाएगा लेकिन वे अगले पांच साल तक राष्ट्रपति रहेंगे याने उन्हें अभी कम से कम एक नई सरकार को शपथ दिलानी होगी। यों तो विपक्ष के जो हाल आज हैं, वे ऐसे ही रहे तो इसी सरकार का लौटना अवश्यंभावी है लेकिन दो साल बाद यदि परिस्थितियां बदलती हैं और यदि कोई स्पष्ट बहुमत की सरकार नहीं आती है तो राष्ट्रपति कोविंद की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी। इस मुद्दे पर भी राष्ट्रपति कोविंद को कड़ी नजर रखनी होगी। यों तो संवैधानिक दृष्टि से राष्ट्रपति सिर्फ मागदर्शन, सलाह और चेतावनी ही दे सकता है। लेकिन वर्तमान में राष्ट्रपति की यह भूमिका भी अति महत्वपूर्ण हो सकती है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

भरपूर नींद ले, तनाव और जंक फूड की लत से बचें

आप अपने कार्यस्थल पर तनाव में रहते हैं, तो यह आपको रात में ज्यादा खाने या जंक फूड लेने के लिए प्रेरित कर सकता है। यह स्थिति आपकी सेहत के लिए घातक हो सकती है। एक नया शोध बताता है कि रात में अच्छी नींद आपको कार्यस्थल के तनाव और शाम को अस्वस्थ करने वाले भोजन से बचा सकती है। अमेरिका में मिशीगन राज्य विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की एसोसिएट प्रोफेसर और इस अध्ययन की सह लेखिका चू-सीयांग चांग ने कहा, हमने पाया है कि जिन कर्मचारियों का कार्यस्थल का दिन तनावभरा रहता है, वे कार्यस्थल की अपनी नकारात्मक भावनाओं को खाने की मेज पर लाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे सामान्य से ज्यादा भोजन करते हैं और स्वस्थ्य भोजन की बजाय जंक फूड को लेना ज्यादा पसंद करत हैं। शोध का निष्कर्ष जर्नल आफ एप्लाइड साइकोलाजी में आनलाइन प्रकाशिता हुआ है। इसके लिए चीन में २३५ कर्मियों के दो अलग-अलग अध्ययन हुए हैं।

एक अध्ययन सूचना

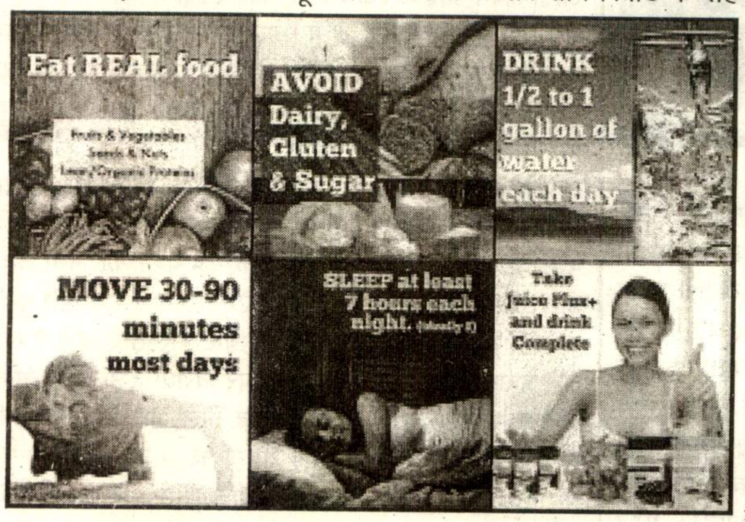

प्रोद्योगिकी से संबंध कर्मचारियों का है, जिनका रोजाना उच्चस्तर के भारी काम से सामना होता है और जो महसूस करते हैं कि उनके पास कार्यस्थल में कभी पर्याप्त समय नहीं रहता है। दूसरा शोध काल सेंटरों के कर्मचारियों से संबंधित है, जो तरह-तरह के ग्राहकों से बातचीत करते-करते अक्सर तनाव में आ जाते हैं। अमेरिका में इलिनाइस विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर और शोध रिपोर्ट के सह लेखक इहाओ लिउ ने कहा, दोनों ही मामलों में, कार्यस्थल पर तनाव नौकरी के दौरान कर्मचारियों के नकारात्मक व्यवहार से जुड़ा हुआ है और शाम को अस्वास्थ्यकर भोजन में रुचि से जुड़ा है। लिउ ने कहा, समय-समय पर भोजन लेना किसी व्यक्ति के नकारात्मक व्यवहार को शांत और नियंत्रित करने की गतिविधि के रूप में कार्य करता है, क्योंकि व्यक्ति प्रतिकूल भावनाओं से बचने का प्रयास करते हैं और इच्छित भावनाओं को स्वीकार करना पंसद करते हैं। लिए ने कहा, दूसरा, अस्वास्थ्यकर भोजन आत्मविश्वास के कम होने का एक कारण हो सकता है। तब भारी काम के कारण तनावपूर्ण भावनाएं आती हैं, तब व्यक्ति सामान्य रूप से अपनी बुद्धि और व्यवहारों में प्रभावी नियंत्रण नहीं रख पाते, जोकि व्यक्ति के लक्ष्यों और सामाजिक मूल्यों से जुड़े होते हैं। चांग ने इस बात को रेखांकित किया कि भरपूर नींद लेना अस्वास्थ्यकर भोजन करने, जोकि कार्यस्थल के तनाव के कारण होता है, से बचाने में मदद करता है। यह ये भी बताता है कि कैसे इससे स्वस्थ व्यवहार जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा, रात में अच्छी नींद कर्मियों को दोबारा तरोताजा बनाती है, जो उन्हें अगले दिन कार्यस्थल पर तनाव से निपटने में मदद करती है और वे अस्वास्थ्यकर भोजन करने से बचाती है।

साभार-नजर की नजर

स्वास्थ्य से सम्बन्धित कहावतें

स्त्री हो या पुरुष सभी स्वस्थ रहना चाहते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आहार-विहार, आचार-विचार का ठीक रखना बहुत आवश्यक है। इन चारों की ठीक रखने के लिए कहावतें भी प्रचलित हैं। इन कहावतों को यदि हम आचरण में उतार लें तो हमें नीरोग और स्वस्थ रहने में बहुत कुछ सहायता मिल सकती है।

१. प्रातः काल खटिया से उठके, पिये तुरन्त पानी।
कबहूं घर में वेद न अइहे, बात घाघ के जानी।

प्रातः काल सो कर उठते ही तुरन्त पानी पीना चाहिए। ऐसा करने से शौच जाने में सरलता हो जाती है। कब्ज दूर हो जाती है। पेट शुद्ध और साफ रहता है। गैस की बीमारी से भी छुटकारा मिल जाता है इसीलिए घाघ कवि कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रातः उठते ही पानी पीते हैं। उसे वैद्य को बुलाने की अथवा वैद्य के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहती।

२. खावै, मूते, सोवै बाम, काये को वेद बसावै गांव।

खावै (भोजन करना) मूते (पेशाब करना) सोवै बाम (बाई करवट सोना) जिस गांव के व्यक्ति भोजन करने के तुरन्त बाद मूत त्यागते हैं, अर्थात् पेशाब करते हैं और बाई करवट सोते हैं। उनको न तो वैद्य के पास जाने की जरूरत है, न उसे बुलाने की जरूरत है और न ही वैद्य को गाँव में बसाने की जरूरत है।

३. प्रातः उठते ही पानी पीवे, दोपहर में मट्ठा पीवे।
सोते समय दूध पीवे, वैद्य के निकट नहीं जावे।।

जो व्यक्ति प्रातः उठते ही पानी पीता है। दोपहर में भोजन के साथ मट्ठा (छाछ, दही आदि) का प्रयोग करता है। रात्रि को सोते समय ग्लास-भर दूध पीता है जो उसका स्वास्थ्य ठीक रहता है। उसे वैद्य, हकीम अथवा डाक्टर की आवश्यकता नहीं रहती।

४. भोजन करके पड़े उतान, आठ श्वास छोड़े परमान।
सोलह दाहिनें, बतिस बाएं, तब कल परे अन्न के खाये।।

भोजन करने के बाद पीठ के बल चित लेट कर आठ बार स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास ले। फिर दाहिनी करवट लेट कर सोलह बार स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास ले। इसके बाद बाई करवट लेट कर बत्तीस बार स्वाभाविक श्वास -प्रश्वास ले। इस प्रकार प्रतिदिन करते रहने से खाया हुआ अन्न भली प्रकार पच जाता है। जो व्यक्ति ऐसा करते हैं, उन्हें वैद्य, हकीम अथवा डॉक्टर की आवश्यकता नहीं रहती है।

५. जो नर बार्यी करवट सोवै।
उसका काल बैठकर रोवै।।

जो व्यक्ति बायीं करवट सोता है। वह बीमार नहीं होता और लम्बे समय तक जीवित रहता है।

पाकिस्तान में १६ वर्षीय हिन्दू लड़की का अपहरण और निकाह

जून में १६ वर्षीय हिन्दू लड़की का सिन्ध में अपहरण कर लिया गया। हिन्दू विवाह अधिनियम लागू हो जाने पर ऐसी घटनाओं की आशा नहीं की जाती थी लेकिन अनुमान गलत निकल रहा है। पुलिय में रिपोर्ट लिखाई गई। विभिन्न हिन्दू संगठनों ने भाग दौड़ भी की। १५ दिन तक लड़की को कहा रखा गया? पता नहीं। लड़के वालों ने पुलिस को सूचित किया कि लड़की ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है और उसका निकाह भी हो गया है। दूरदर्शन पर दिखाया गया कि लड़की का निकाह ३५ साल के व्यक्ति से हुआ है जिसके ५ बच्चे पहले से हैं। यह उसकी दूसरी पत्नी बनेगी। लड़की दूल्हे की बेटी सी लग रही थी। स्कूल रिकार्ड के अनुसार लड़की १६ वर्ष की है जबकि पुलिस को सूचित किया गया कि लड़की की उम्र लगभग १८ साल है। वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय के संचालक इन्द्र देव ने उपरोक्त कांड पर कहा है कि सिंध के हिन्दुओं को तो १९४७ में ही भारत आकर यहां से मुस्लिमों को बाध्य करके पाकिस्तान भेजना चाहिए था क्योंकि मुस्लिम आक्रामक -संगठित और सह-अस्तित्व विरोधी सोच के होते हैं।

जागो और जगाओ!

क्योंकि खंडित भारत में भी, हिन्दू का प्रतिशत, लगातार घट रहा है!!

१. 1881-1941, 60 वर्षो में हिन्दू का प्रतिशत 80 से घटकर 74 रह गया था।
२. विभाजन के बाद 1947-2017 में (70 वर्षों में) हिन्दू का प्रतिशत फिर घटकर 88 से 80 प्रतिशत रह गया है।
३. गिरावट को रोकने के लिए सभी दल कुछ भी करने को तैयार नहीं हैं।
४. ऐसी विचित्र स्थिति में सावरकरवादी पार्टी -अखिल भारत हिन्दू महासभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली- 110001 (फोन 011-23365138) इस गिरावट को रोकने के लिए चीन जैसा परिवार नियोजन का सख्त कानून बनवाना चाहती है जो सभी पर लागू हो।
५. कृपया तन-मन-धन से सहयोग व समर्थन करें।

आई० डी० गुलाटी, पूर्व सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी, अ०भा० हिन्दू महासभा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर व्रत के नियम

साभार - दिव्य रश्मि

एकादशी उपवास के दौरान पालन किये जाने वाले सभी नियम जन्माष्टमी उपवास के दौरान भी पालन किये जाने चाहिए। अतः जन्माष्टमी के व्रत के दौरान किसी भी प्रकार के अन्न का ग्रहण नहीं करना चाहिए। जन्माष्टमी का व्रत अगले दिन सूर्योदय के बाद एक निश्चित समय पर तोड़ा जाता है जिसे जन्माष्टमी के पारण समय से जाना जाता है।

जन्माष्टमी का पारण सूर्योदय के पश्चात अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र के समाप्त होने के बाद किया जाना चाहिए। यदि अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र सूर्यास्त तक समाप्त नहीं होते तो पारण किसी एक के समाप्त होने के पश्चात किया जा सकता है। यदि अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र में से कोई भी सूर्यास्त तक समाप्त नहीं होता तब जन्माष्टमी का व्रत दिन के समय नहीं तोड़ा जा सकता। ऐसी स्थिति में व्रती को किसी एक के समाप्त होने के बाद ही व्रत तोड़ना चाहिए। अतः अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र के अंत समय के आधार पर कृष्ण जन्माष्टमी का व्रत दो सम्पूर्ण दिनों तक प्रचलित हो सकता है। हिन्दू ग्रन्थ धर्मसिन्धु के अनुसार, जो श्रद्धालु–जन लगातार दो दिनों तक व्रत करने में समर्थ नहीं हैं, वो जन्माष्टमी के अगले दिन ही सूर्योदय के पश्चात व्रत को तोड़ सकते हैं।

कृष्ण जन्माष्टमी के दो अलग–अलग दिनों के विषय में अधिकतर कृष्ण जन्माष्टमी दो अलग–अलग दिनों पर हो जाती है। जब–जब ऐसा होता है, तब पहले दिन वाली जन्माष्टमी स्मार्त सम्प्रदाय के लोगों के लिए और दूसरे दिन वाली जन्माष्टमी वैष्णव सम्प्रदाय के लोगों के लिए होती है। प्रायः उत्तर भारत में श्रद्धालु स्मार्त और वैष्णव जन्माष्टमी का भेद नहीं करते और दोनों सम्प्रदाय जन्माष्टमी एक ही दिन मनाते हैं। हमारे विचार में यह सर्वसम्मति इस्कॉन संस्थान की वजह से है। "कृष्ण चेतना के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय" संस्था, जिसे इस्कॉन के नाम से अच्छे से जाना जाता है, वैष्णव परम्पराओं और सिद्धान्तों के आधार पर निर्माणित की गई है। अतः इस्कॉन के ज्यादातर अनुयायी वैष्णव सम्प्रदाय के लोग होते हैं। इस्कॉन संस्थान सर्वाधिक व्यावसायिक और वैश्विक धार्मिक संस्थानों में से एक है जो इस्कॉन संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अच्छा–खासा धन और संसाधन खर्च करती है। अतः इस्कॉन के व्यावसायिक प्रभाव और विज्ञापिता की वजह से अधिकतर श्रद्धालु–जन इस्कॉन द्वारा चयनित जन्माष्टमी को मनाते हैं। जो श्रद्धालु वैष्णव धर्म के अनुयायी नहीं हैं वो इस बात से अनभिज्ञ है कि इस्कॉन की परम्पराएँ भिन्न होती हैं और जन्माष्टमी उत्सव मनाने का सबसे उपयुक्त दिन इस्कॉन से अलग भी हो सकता है। स्मार्त अनुयायी, जो स्मार्त और वैष्णव सम्प्रदाय के अंतर को जानते हैं, वे जन्माष्टमी व्रत के लिए इस्कॉन द्वारा निर्धारित दिन का अनुगमन नहीं करते हैं। दुर्भाग्यवश ब्रज क्षेत्र, मथुरा और वृन्दावन में, इस्कॉन द्वारा निर्धारित दिन का सर्वसम्मति से अनुगमन किया जाता है। श्रद्धालु जो दूसरों को देखकर जन्माष्टमी के दिन का अनुसरण करते हैं, वो इस्कॉन द्वारा निर्धारित दिन को ही उपयुक्त मानते हैं। लोग जो वैष्णव धर्म के अनुयायी नहीं होते हैं, वो स्मार्त धर्म के अनुयायी होते हैं। स्मार्त अनुयायियों के लिए, हिन्दू ग्रन्थ धर्मसिन्धु और निर्णय सिन्धु में, जन्माष्टमी के दिन को निर्धारित करने के लिए स्पष्ट नियम हैं। श्रद्धालु जो वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी नहीं हैं, उनको जन्माष्टमी के दिन का निर्णय हिन्दू ग्रन्थ में बताये गये नियमों के आधार पर करना चाहिए। इस अंतर को समझने के लिए एकादशी उपवास एक अच्छा उदाहरण है। एकादशी के व्रत को करने के लिए, स्मार्त और वैष्णव सम्प्रदायों के अलग–अलग नियम होते हैं। ज्यादातर श्रद्धालु एकादशी के अलग–अलग नियमों के बारे में जानते हैं परन्तु जन्माष्टमी के अलग–अलग नियमों से अनभिज्ञ होते हैं। अलग–अलग नियमों की वजह से, न केवल एकादशी के दिनों बल्कि जन्माष्टमी और राम नवमी के दिनों में एक दिन का अंतर होता है। वैष्णव धर्म को मानने वाले लोग अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र को प्राथमिकता देते हैं और वे कभी सप्तमी तिथि के दिन जन्माष्टमी नहीं मनाते हैं। वैष्णव नियमों के अनुसार हिन्दू कैलेंडर में जन्माष्टमी का दिन अष्टमी अथवा नवमी तिथि पर ही पड़ता है।

जन्माष्टमी का दिन तय करने के लिए, स्मार्त धर्म द्वारा अनुगमन किये जाने वाले नियम अधिक जटिल होते हैं। इन नियमों में निशिता काल को, जो कि हिन्दू अर्धरात्रि का समय है, को प्राथमिकता दी जाती है। जिस दिन अष्टमी तिथि निशिता काल के समय व्याप्त होती है, उस दिन को प्राथमिकता दी जाती है। इन नियमों में रोहिणी नक्षत्र को सम्मिलित करने के लिए कुछ और नियम जोड़े जाते हैं। जन्माष्टमी के दिन का अंतिम निर्धारण निशिता काल के समय, अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र के शुभ संयोजन के आधार पर किया जाता है। स्मार्त नियमों के अनुसार हिन्दू कैलेंडर में जन्माष्टमी का दिन हमेशा सप्तमी अथवा अष्टमी तिथि के दिन पड़ता है।

यह पृष्ठ स्मार्त सम्प्रदाय के लिए जन्माष्टमी का दिन दर्शाता है और अगर वैष्णव जन्माष्टमी का दिन स्मार्त जन्माष्टमी से पृथक होता है तो उसे स्पष्ट करने के लिए टिप्पणी संकलित कर दी जाती है। कृष्ण जन्माष्टमी को कृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी, रोहिणी अष्टमी, श्रीकृष्ण जयन्ती और श्री जयन्ती के नाम से भी जाना जाता है।

जन्माष्टमी के त्यौहार में भगवान विष्णु की, श्रीकृष्ण के रूप में, उनकी जयन्ती के अवसर पर प्रार्थना की जाती है। हिन्दुओं का यह त्यौहार भाद्रपद (अगस्त–सितंबर) के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन भारत में मनाया जाता है। हिन्दू पौराणिक कथा के अनुसार कृष्ण का जन्म, मथुरा के असुर राजा कंस, जो उसकी सदाचारी माता का भाई था, का अंत करने के लिए हुआ था। जन्माष्टमी के अवसर पर पुरुष व औरतें उपवास व प्रार्थना करते हैं। मन्दिरों व घरों को सुन्दर ढंग से सजाया जाता है व प्रकाशित किया जाता है। उत्तर प्रदेश के वृन्दावन के मन्दिरों में इस अवसर पर खर्चीले व रंगारंग समारोह आयोजित किए जाते हैं। कृष्ण की जीवन की घटनाओं की याद को ताजा करने व राधा जी के साथ उनके प्रेम का स्मरण करने के लिए रास लीला की जाती है। इस त्यौहार को कृष्णाष्टमी अथवा गोकुलाष्टमी के नाम से भी जाना जाता है। बाल कृष्ण की मूर्ति को आधी रात के समय स्नान कराया जाता है तथा इसे हिन्डौले में रखा जाला है। पूरे उत्तर भारत में इस त्यौहार के उत्सव के दौरान भजन गाए जाते हैं व नृत्य किया जाता है। मानव जीवन सबसे सुंदर और सर्वोत्तम होता है। मानव जीवन की खुशियों का कुछ ऐसा जलवा है कि भगवान भी इस खुशी को महसूस करने समय–समय पर धरती पर आ जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार भगवान विष्णु ने भी समय–समय पर मानव रूप लेकर इस धरती के सुखों को भोगा है। भगवान विष्णु का ही एक रूप कृष्ण जी का भी है जिन्हें लीलाधर और

लीलाओं का देवता माना जाता है। कृष्ण को लोग रास रसिया, लीलाधर, देवकी नंदन, गिरिधर जैसे हजारों नाम से जानते हैं। भगवान कृष्ण द्वारा बताई गई गीता को हिंदू धर्म के सबसे बड़े ग्रंथ और पथ प्रदर्शक के रूप में माना जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी कृष्ण जी के ही जन्मदिवस के रूप में प्रसिद्ध है। मान्यता है कि द्वापर युग के अंतिम चरण में भाद्रपद माह के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को मध्यरात्रि में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। इसी कारण शास्त्रों में भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन अर्द्धरात्रि में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाने का उल्लेख मिलता है। पुराणों में इस दिन व्रत रखने को बेहद अहम बताया गया है। इस साल जन्माष्टमी १५ सितंबर को है।

कृष्ण जन्मकथा

श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की मध्यरात्रि को रोहिणी नक्षत्र में देवकी व श्रीवसुदेव के पुत्र रूप में हुआ था। कंस ने अपनी मृत्यु के भय से अपनी बहन देवकी और वसुदेव को कारागार में कैद किया हुआ था। कृष्ण जी जन्म के समय घनघोर वर्षा हो रही थी। चारों ओर घना अंधकार छाया हुआ था। भगवान के निर्देशानुसार कृष्ण जी को रात में ही मथुरा के कारागार से गोकुल में नंद बाबा के घर ले जाया गया। नन्द जी की पत्नी यशोदा को एक कन्या हुई थी। वसुदेव श्रीकृष्ण को यशोदा के पास सुलाकर उस कन्या को अपने साथ ले गए। कंस ने उस कन्या को वासुदेव और देवकी की संतान समझ पटककर मार डालना चाहा। लेकिन वह इस कार्य में असफल ही रहा। दैवयोग से वह कन्या जीवित बच गई। इसके बाद श्रीकृष्ण का लालन–पालन यशोदा व नंद ने किया। जब श्रीकृष्ण जी बड़े हुए तो उन्होंने कंस का वध कर अपने माता–पिता को उसकी कैद से मुक्त कराया।

जन्माष्टमी में हांडी फोड़

श्रीकृष्ण जी का जन्म मात्र एक पूजा अर्चना का विषय नहीं बल्कि एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस उत्सव में भगवान के श्रीविग्रह पर कपूर, हल्दी, दही, घी, तेल, केसर तथा जल आदि चढ़ाने के बाद लोग बड़े हर्षोल्लास के साथ इन वस्तुओं का परस्पर विलेपन और सेवन करते हैं। महाराष्ट्र में जन्माष्टमी के दौरान, कृष्ण के द्वारा बचपन में लटके हुए छींकों (मिट्टी की मटकियों), जो कि उसकी पहुँच से दूर होती थीं, से दही व मक्खन चुराने की कोशिशें करने का उल्लासपूर्ण अभिनय किया जाता है। इन वस्तुओं से भरा एक मटका अथवा पात्र जमीन से ऊपर लटका दिया जाता है, तथा युवक व बालक, इस तक पहुँचने के लिए मानव पिरामिड बनाते हैं और अन्ततः इसे फोड़ डालते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में जन्माष्टमी पर्व मनाया जाता है। भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को मध्य रात्रि में, रोहिणी नक्षत्र तथा वृषभ लग्न में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए प्रतिवर्ष जन्माष्टमी मनाई जाती है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की व्रत व पूजन विधि इस प्रकार है :

❖ प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त

शेष पृष्ठ 11 पर

"बड़बोले, अहंकारी व भड़काऊ वक्तव्यों पर अंकुश लगाना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन नहीं!"

आपराधिक मानहानि प्रकरण में उच्चतम न्यायालय की अवमानना पर राहुल गांधी पर कानूनी तमाचा

हरिकृष्ण निगम

कांग्रेस के उपाध्यक्ष व अमेठी के सांसद राहुल गांधी जब चाहें लोकसभा में जब चाहें अनुपस्थित रहें अथवा उपस्थित रहने पर भी हाल में जब तब मानसून सत्र के दौरान सोते दीखें पर ऐसा कई बार होने से ऐसे समाचारों का महत्व जाता रहा है। पर जब वे पूरे उत्साह से बोलते हैं तब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को फासिस्ट और महात्मा गांधी की हत्या के लिए उत्तरदायी ठहराने से कभी नहीं चूकते हैं।

कोई इसे 'एक सनकी का असत्य कथन' कह कर टाल सकता है पर उनकी संघ के प्रति वितृष्णा व घृणा का क्या रहस्य है? क्या यह मात्र एक संयोग है कि संघ की स्थापना के ६० वर्ष बाद भी जब कि जनता इसके बारे में अरसे से सकारात्मक धारणा बना चुकी है तब भी सोनिया व राहुल गांधी पुराने राग ही अलाप रहे हैं। हाल में सर्वोच्च न्यायालय ने कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी के अपने दुष्प्रचार के मन्तव्य से झूठे वक्तव्यों के लिए क्षमा मांगने व खेद प्रकट करने का निर्देश दिया है। उसने राहुल गांधी को आपराधिक मानहानि के मामले में निचली अदालत के निर्देश का सामना करना अत्यन्त जरूरी माना है। यह टिप्पणी जस्टिस दीपक मिश्रा और जस्टिस रोहिन्टन नरीमान की खण्डपीठ ने की थी। राजेश महादेव कुंटे नामक एक व्यक्ति ने भिवंडी (महाराष्ट्र) में आपराधिक मानहानि का मुकदमा दर्ज करवाया था। दर्ज एफ. आई. आर. को राहुल गांधी रद्द करवाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में अपनी अर्जी दे चुके थे। राहुल गांधी ने कहा था कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ गांधी जी की हत्या के लिए जिम्मेदार रहा है। उन्हें अब मानहानि के प्रकरण की सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय की खण्डपीठ द्वारा उठाए प्रश्नों का उत्तर उपस्थित रह कर देना उनकी आधुनिक इतिहास की अज्ञानता के परिप्रेक्ष्य में गम्भीर माना जा रहा है और विशेष न्यायालयों के निर्णयों की अवज्ञा को कांग्रेस को दीर्घकालीन हालि पहुंचाने वाला माना ला रहा है।

क्या आपराधिक इरादे से मानहानि करने के प्रयासों पर न्यायालय द्वारा अंकुश लगाना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन है? कदापि नहीं! पिछले कई दशकों से ऐसा होता रहा है और आप इस निर्णय को किस पाले में खड़े हैं उसके आधार पर अपने स्वार्थ से निर्धारित करते हैं। अनेकों ऐसे अवसर आते हैं जब एक अपराधी या आतंकवादी किसी कानून नुक्ते पर जमानत पाता है या कभी कभी छूट भी जाता है तब वह देश की न्याय प्रक्रिया के गुणगान में जुट जाता है। पर जब उसे सजा मिलती है तब देश के कानूनों को कोसता है, निर्णय को एकांगी व पक्षपात पूर्ण मानता है। यह हम प्रतिदिन निर्लज्ज होकर देखते हैं जब समरसता व शान्ति भंग करने वाली टिप्पणियां न्याय प्रक्रिया के विरुद्ध होती हैं।

राहुल गांधी पहले भी संघ के विरुद्ध जो विषाक्त टिप्पणियां पिछले कई महीनों से कर चुके हैं और जिन्हें हमारे देश का अंग्रेजी प्रेस व अनेक सेकुलर कहलाने वाले नेता जिस भड़काऊ शैली में दोहरा रहे हैं वह निन्दनीय है। संघ के विरुद्ध देश की स्वतंत्रता के पहले के समय से भी दुराग्रह वश लिखा जा चुका है उसे अक्षरशः दोहराना एक संशपूर्ण बौद्विक विलासिता का नमूना है। यदि इस देश में कोई भी, चाहे व सोनिया या राहुल गांधी ही हो, राष्ट्र की परिभाषा, हिन्दू अर्थ व्यकल्पना या पॉलिटी अथवा उनकी समस्याओं पर उनकी सोच का ही अनुकरण करे तो यह निरंकुशता ही होगी।

हिन्दुत्व की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, हमारी राष्ट्रीय पहचान साम्यवादियों या सेकुलरवादियों के घोर विरोध के बावजूद दीर्घ कालकण्ड में विकसित हुई है। एक देश प्रेमी के लिए हिन्दुत्व एकांगी नहीं, गतिमान विश्व में उसकी प्रासंगिता है, एक धरोहर है। यह कदाचित राहुल गांधी नहीं समझेंगे कि हिन्दूधर्म और भारतीयता अन्योन्याश्रित है। हिन्दू और इतर धर्मो के लोग संस्कृति की एकरूपता के कारण सैद्वान्तिक रूप से एक ही हैं– उपासना पद्वति कोई भी हो। हिन्दू धर्म मानसिक विशालता का जो दावा करता है उतना दुनिया का कोई विश्वास नही। सिन्धु नदी से हिन्दमहासागर तक व्याप्त भारत भूमि को जो भी अपनी पितृभूमि या पुण्यभूमि मानता है वह असली हिन्दू है इस वक्तव्य में अनेक लोगों को अधिनायकवादी हिटलर का प्रतिबिम्ब दीखता है और सोनिया–राहुल जैसे लोगों की मानसिकता कदाचित कभी भी नहीं समझ सकेंगे।

आज से लगभग ६ वर्ष पहले जनवरी २०१० में भारतीय विचारमंच, गुजरात के एक आधिकारिक प्रकाशन "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दुत्व" में डा. सुब्रह्मण्यन स्वामी ने राहुल गांधी तो नहीं पर सोनिया गांधी को हिन्दुओं का शत्रु व भारत में वेटिकन का प्रतिनिधि बताया था वे घातक, हिंसक योजना की गुप्त आवृत्ति हैं और प्रत्येक झूठे विदेशी मिशनरी को उनका संरक्षण प्राप्त है। वे प्रवासी वीजा पर भारत आने में सफल हैं और सरे–आम निम्नता की हद तक जाकर हिन्दुआं को ईसाई बनाने की सामर्थ्य रखती है। उनका साड़ी–पल्लू, हिन्दी बोलने, मन्दिर जाने या भीड़ द्वारा सीता –मैया के नारे लगवाना या नमस्ते कहने से मैं रंचमात्र भी प्रभावित नहीं हूं। वे तो भारतीय ही नहीं, हिन्दू क्या बनेंगी।"

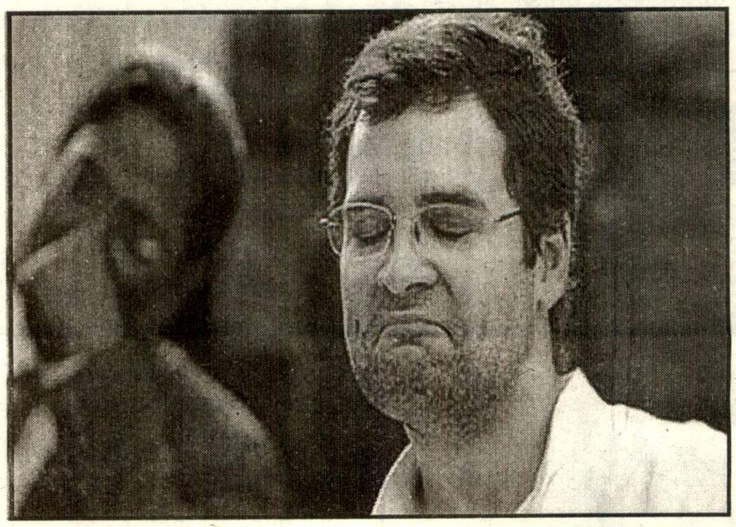

डा. सुब्रह्मण्यम स्वमी दुःख प्रकट करते हैं कि गत दस वर्षो में संसद में किसी ने भी सोनिया के संदेहात्मक झूठ पर आधारित अतीत के भ्रष्टाचार, अनैतिक राजनीति और राष्ट्र के दुश्मनों पर से उनके सम्बंधों पर आवाज नहीं उठाई। वे छल से भारत की नागरिक बनी है और किसी भी समय नागरिक कानून की धारा १० के अन्तर्गत नागरिकता से वंचित की जा सकती है। फिर भी प्रत्येक सरकार ने उनकी और उनके सहअपराधी पुत्र की रक्षा की है। इस राजनीति के बनावटी खेल का आयाम प्रभावोत्पादकता के लिए भयावोहन (ब्लैकमेल)तक जाता है।

सोनिया गांधी हिन्दुओं के शत्रुओं की उत्प्रेरक है और आज पर्दे के पीछे रहकर देश को शत्रुओं को सौंप देन की स्थिति में हैं। हाल में हिन्दुओं को मनुवादी व मनुस्मृति को जलाने की बात सामान्य नहीं है। कहीं भाई संगारे जो एक सार्वजनिक समारोह में मनुस्मृति को जलाने के प्रयास में सब के सामने संयोगवश खुद आग में जल गए थे वह घटना भुलाई नहीं जा सकती है। जहाँ जब आधा विश्व पाषाण युग में या तब 'मनु' और 'हम्मुराबी' ने विश्व को न्याय संहिता दी–ऐसा सारी दुनियां के न्यायविद आज भी मानते हैं। पर राहुल गांधी व सोनिया के दरबारी घृणा फैलाने के उद्देश से कुछ और ही कहते हैं। हाल में राहुल गांधी को दलितों पर अत्याचार के नाम पर राजकोट जा कर फिर संघ व नरेन्द्र मोदी पर हमला की एक अवसर मिला है कि वहां के प्रकरण पर वे शर्मिन्दा है और दूसरे कांग्रेसी नेता अहमद पटेल भी कह रहे हैं कि वे गुजरात के राजनीतिक माडेल में सिर्फ वहां के उद्योगपतियों का हित साधते हैं, दलितों का नहीं।

डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने सोनिया गांधी की शैक्षणिक योग्यता के बारे भी ली झूठी शपथ, उनके परिवार का युद्ध –पूर्व का नाजी सम्बन्ध और विश्व युद्ध के पश्चात का के. जी. बी. सम्बन्ध छिपाना, ओट्टावी क्वात्रोची के साथ संवेदनशील आर्थिक व्यवहार, १९६० में पाकिस्तानी संस्था में उनकी शर्मनाक नौकरी और वर्तमान में स्विस बैंक का रु० १० हजार करोड़ रुपये से अधिक के खातों का जिक्र किया है और अपनी शेष मैगजीन पर इन्टरनेट में भी डाला था। उन्हें लोकतांत्रिक तरीके से ही जनमत बनाकर न्यायिक प्रक्रिया से ही हटाना होगा, यह डा० स्वामी मानते है और अपने भावी कार्यक्रम की निर्देशिका में आज राहुल गांधी, प्रियंका, वाड्रा व उनके पति को भी शामिल कर चुके हैं। उनकी दृष्टि में कुछ विपक्षी नेताओं की सोनिया के प्रति दुविधा की भावना हिन्दुत्व की कार्य सूची के कार्यान्वयन में मुख्य अवरोध है। यदि दंभीधर्म निरपेक्षता और दंभी हिन्दुओं के भ्रामक तर्कदोष का भेद हिन्दू जान लें तब सब कुछ बदल सकता है। भाजपा ने पहले अपनी सामाजिक ताकत की नींव इस देश में गहरी की तब उसके बाद ही राजसत्ता पर कब्जा किया इसलिए फिर अपने शत्रु की प्रकृति समझ कर उससे पहले निपटना होगा तभी उसके भावी एजेन्डा व कार्य सूची का कार्यान्वयन संभव है। राहुल गांधी को यह कौन बताएगा कि १९४८ के दौरान गांधी जी की हत्या के तुरन्त बाद संघ के गुरु जी बलीराम हेडगेवार का अधिकांश समय जेल में बीता था और उस समय बाला साहब देवरस चुपचाप संघ का कार्य देखते थे। अंग्रेजी दैनिकों में संघ के विरुद्ध दुष्प्रचार चरम सीमा था। पर उस समय भी राष्ट्रवादी कुछ सांसद कांग्रेस में थे ६० के दशक में हुए थे जैसे बनवारी लाल पुरोहित जो वामपंथियों व हिन्दू–विद्वेषियों को मुंह तोड़ उत्तर देते थे। उस समय भी कांग्रेस व वामपंथियों की धोखाधड़ी इतनी चरम सीमा पर थी कि कांग्रेसी गोविन्द सहाय ने एक ग्रंथ लिखा था जिसमें उन्होंने लिखा था कि संघ आरम्भ करने के पहले डा. हेडगेवार हिटलर से मिलने जर्मनी गए थे। यह सर्वविदित था कि डा. हेडगेवार ने यावज्जीवन एक बार भी देश के बाहर पैर नहीं रखा। इस तरह के झूठे प्रचार को पूर्व प्रधानमंत्री बढ़ावा देते रहे थे। जब बाला साहब देवरस ने प्रधानमंत्री के स्तर पर ऐसे असत्य का प्रतिरोध किया तब कांग्रेस प्रवक्ता ने इस पर क्षमा याचना भी मांगी। १९६२ के चीनी आक्रमण के समय नेहरू जी ने संघ के लोगों को देशभक्त कह कर १९६३ में जनवरी २६ को जब गणतंत्र की परेड़ हुई थी संघ को आमंत्रित किया था। जब विवाद उठा था तब पण्डित नेहरू ने स्वयं वक्तव्य दिया कि संघ के लोग देशभक्त हैं और हर आपदा में आगे रहते हैं। इसी कारण वे पूर्ण गणवेश में १९६३ के गणतंत्र दिवस के संचलन में भाग ले सके थे। भारत के ऊपर आक्रमण में चीनियों को दोषी न मानने व राष्ट्रद्रोही वक्तव्य देने वाले हर रंग के साम्यवादी वस्तुतः भारतीय प्रायद्वीप की आत्मा के शत्रु रहे हैं। यदि पुराने विपुल साहित्य को जो संघ के अध्ययन के लिए दशकों से रचा गया है तब भी यदि राहुल गांधी, सोनिया या कोई भी

शेष पृष्ठ 11 पर

मुसलमानों का सशक्तिकरण क्यों

विनोद कुमार सर्वोदय

मुस्लिम तुष्टिकरण को नये शब्दों में ढाल कर मुस्लिम सशक्तिकरण का नामकरण करके मोदी सरकार के अल्पसंख्यक मंत्रालय के मुस्लिम मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी दृढ़ता पूर्वक अनेक योजनायें स्थापित कर रहें है। केंद्र की पूर्व सरकारों द्वारा मुस्लिम तुष्टिकरण की नीतियों को अफीम बताने वाले नकवी जी ने क्या बहुसंख्यक समाज को अज्ञानी व मुर्ख समझ लिया है। क्या बहुसंख्यकों के साथ भेदभाव बढ़ा कर केवल मुसलमानों को सशक्त करके वे किस प्रकार मुस्लिम तुष्टिकरण से अपने को पृथक रख सकते है। निसंदेह यह वास्तविकता है कि मुस्लिम तुष्टिकरण हेतु ही मुस्लिम सशक्तिकरण किया जा रहा है। राजनीति में अनेक कार्य सत्ता पाने के लिए किए जाते है, उसी हेतु मुस्लिम तुष्टिकरण को बढ़ावा दिए जाने की दशको पुरानी परम्परा चली आ रही है। जोकि वर्तमान वातावरण में एक मृगमरीचिका से अधिक कुछ नहीं। क्योंकि जब भा.ज.पा. राष्ट्रवाद और सबका साथ व सबका विकास के नाम पर सत्ता पाने में सफल हुई है तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह मुसलमानों को अलग से लाभान्वित करने की परम्परा को बनायें रखें? ध्यान रहें मुस्लिम तुष्टिकरण की बढ़ती हुई योजनाओं से आहत व तिरस्कृत होने वाले बहुसंख्यक हिन्दू समाज ने ही गुजरात के राष्ट्रवादी नायक श्रीमान नरेंद मोदी को २०१४ के आम चुनावों में सत्ता के शीर्ष पद पर बैठाया था।

इसमें कोई संदेह नही कि तुष्टिकरण हो या सशक्तिकरण दोनों का ध्येय तो एक ही है कि अल्पसंख्यक कहे जाने वाले मुसलमानों के मताधिकारों की फसल काट कर उसके सहारे चुनावों में विजय प्राप्त करके सत्ता का सुख भोगा जाये। राष्ट्रवादी समाज को साधे रहने के लिये शब्दों के संजाल से भ्रमित करके मुस्लिम पोषित राजनीति को बल देना सर्वथा बहुसंख्यकों के स्वाभिमान को ठेंगा दिखाने के समान है। क्या बहुसंख्यकों को चुनावों में विभिन्न प्रकार के लुभावने नारे जैसे तुष्टिकरण किसी का नही आदि द्वारा ठगा जाना उचित था? क्या चुनावों में जनता को भ्रमित करने के लिए नेताओं को कुछ भी कहने का अधिकार है? यह अतिनिन्दनीय है कि बहुसंख्यको के मतों से जीतने वाली सरकार भी अल्पसंख्यको के पोषण में निरंतर सक्रिय है? अनेक समस्याओं से घिरे हिंदू समाज को क्या साधन नहीं चाहिए? क्या वह निर्धन व पिछड़ा हुआ नहीं है? अगर निष्पक्ष निरीक्षण किया जाए तो ज्ञात होगा कि मुसलमानों की जनसँख्या से अधिक अभी भी हिन्दू दलित व पिछडे हुए है। उस पर भी कैसा विरोधाभास है कि जिस सच्चर कमेटी द्वारा २००७ में मुस्लिमो की स्थिति पर प्रस्तुत की गयी सुनियोजित रिपोर्ट का भारतीय जनता पार्टी ने सदा विरोध किया, वहीं आज सत्ता में आने के बाद उसी रिपोर्ट को आधार मान कर मुस्लिमों के सशक्तिकरण में लगी हुई है। अगर सरकार चलाने के लिए मुसलमानों के तुष्टिकरण की राजनैतिक विवशता को नकारना संभव नहीं तो फिर मोदी जी के कथन कि वे सरकार नहीं देश चलाने आये है का क्या तात्पर्य है?

पूर्व में भी सोनियानीत सप्रंग सरकार ने अपने कार्यकाल के दस वर्षो में बहुसंख्यक बनाम अल्पसंख्यक के बीच अनेक षडयंत्रों द्वारा देश में परस्पर समाजिक भाईचारा कम करके वैमनस्य को बढ़ावा दिया था। पहली बार २००६ में अल्पसंख्यक मंत्रालय का गठन करके संविधान के धर्मनिरपेक्ष स्वरुप का स्पष्ट उल्लंघन हुआ। उस समय के प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने राष्ट्रीय एकता परिषद में १७ दिसम्बर २००६ में सहर्ष घोषणा की थी कि भारत के संसाधनों पर पहला अधिकार (अल्पसंख्यक) मुसलमानों का है। लोकतांत्रिक सरकार का यह भी एक अधिनायकवादी चेहरा था। उस अवधि (२००४–२०१४) में उच्च सरकारी पदों पर जहाँ जहाँ संभव हुआ वहां वहां अल्पसंख्यकों की नियुक्ति की जाती रही। यह कहना भी अनुचित नहीं की सच्चर समिति की रिपोर्ट भी अल्पसंख्यको को लाभान्वित करने की मानसिकता से ही बनवाई गयी थी। सोनिया कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के समय अल्पसंख्यक पोषित योजनाओं को विस्तार से समझने के लिए भारतीय पुलिस सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारियों श्री रामकुमार ओहरी व श्री जयप्रकाश शर्मा द्वारा अंग्रेजी में लिखित पुस्तक द मेजोरिटी रिपोर्ट जो २०१३ में प्रकाशित हुई थी का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि धर्मनिरपेक्षता का प्रवचन करने वाले अनेक

असंवैधानिक उपायों से अल्पसंख्यको को सशक्त करते जा रहें हैं।

भारतीय विदेश सेवा के अवकाश प्राप्त राजदूत श्री ओमप्रकाश गुप्ता ने भी अपनी व्यक्तिगत वेबसाइट (www.opgupta.org) में हिन्दुओं के साथ किये जाने वाले बृहत शोषणकारी भेदभाव के विस्तृत आंकडें दिए है। अल्पसंख्यको को लाभ पहचानें की समस्त सरकारी योजनाओं का विस्तृत विवरण सरकारी वेबसाइट (www.minorityaffairs.gov.in) में देख कर अगर कुछ निर्धन हिन्दू धर्म परिवर्तन को उत्सुक हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। क्योंकि गावों और दूरस्थ क्षेत्रो में रहने वाले पिछड़ी जाति, अनुसूचित जनजाति व जातियों के हिन्दुओं की आर्थिक व समाजिक स्थिति मुसलमानों से भी अधिक दयनीय है। स्वतंत्रता के ७० वर्ष बाद भी अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रो में आधारभूत सरंचना का विकास भी अभी तक नही हो पाया है।

यह भी समझना होगा कि कुल मुसलमानों की संख्या की तुलना में भी हिंदुओं की संख्या अधिक है जो पिछड़ी हुई है और संसाधनों की कमियों को झेल रही है। सुरेश तेंदुलकर समिति की संभवतः २०१२–१३ में आई एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का लगभग ३७.२ प्रतिशत भाग गरीबी रेखा (बीपीएल) से नीचे रहता है। अतः इसके अनुसार बीपीएल के नीचे रहने वाले हिंदुओं की संख्या उस समय लगभग ३५–३६ करोड़ थी जोकि अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रो व नगरों में झुग्गी–झोपड़ियों में रहने को विवश है। निर्धनतम हिंदुओं का शर्मनाक शोषण और उनसे किये जाने वाला निर्लज्ज भेदभाव किसी भी हिन्दू राजनेता, मानवाधिकारवादियों व समाजिक कार्यकर्ता एवं धर्माचार्यो को क्यों नही पीड़ा देता? क्या ये सब भौतिक सुविधाओं में इतने अधिक जकड़े जा चुके है कि उपेक्षित हिंदू समाज के दर्द से दूर रहने में ही अपना भला समझते है?

इस सबके अतिरिक्त हमें सत्ता के लोभी राजनेताओं की उस घिनौनी मानसिकता को भी नही भूलना चाहिये जिसके अनुसार २०११ में साम्प्रदायिक हिंसा निरोधक विधेयक का प्रस्ताव किया गया था । जिसके ६ अध्यायों में लिखी १३८ धाराओं की भाषा को ही समझना बहुत कठिन था। जिसमें बहुसंख्यक हिंदुओं को ही अपराधी बनाये जाने के प्रावधान किये गये थे, जबकि अल्पसंख्यक मुस्लिम व ईसाई आदि को कभी भी दोषी नही माना था। वास्तव में इस षडयंत्रकारी विधेयक की भूमिका में सोनिया गाँधी की राष्ट्रीय सलाहकार परिषद सक्रिय थी। जिसमें मुसलमान, ईसाई व कुछ अन्य हिन्दू विरोधी सम्मलित थे। इस विधेयक का मुझ जैसे अनेक राष्ट्रवादियों ने देश के अनेक भागों में सैकड़ो गोष्ठियां व सेमिनार करके एवं लाखों पत्रक वितरित करके बड़े स्तर पर विरोध किया और इसको रुकवाने में सफल हुए थे। मै यहां एक विशेष बिंदू यह भी बताना चाहता हूं कि उस समय अधिकांश राजनैतिक दलो में इस असंवैधानिक विधेयक का विरोध करने के लिये कोई आक्रोश नहीं था। साथ ही इस गुपचुप तरीके से लाये जाने वाला विधेयक कुछ राष्ट्रवादी राजनेताओं के संज्ञान में भी बाद में आया था।

क्या भारत को जो अपनी धर्मभूमि, मातृभूमि, पितृभूमि व कर्मभूमि मानते है उनको अनेक प्रकार से उत्पीड़ित करके आक्रांताओं के वंशजो को प्रोत्साहित किया जाता रहें और उनके द्वारा दिये गये राजस्व से ही मुसलमानो का सशक्तिकरण करके उन बहुसंख्यक हिंदुओं से यह भी आशा रखी जाये कि वह विभिन्न जिहादी अत्याचारों को सह कर भी सांप्रदायिक सोहार्द बनायें रखे? क्या धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में संविधान की मूल भावना के विरुद्ध जाकर अल्पसंख्यक आयोग व अल्पसंख्यक मंत्रालय आदि संस्थानों का गठन केवल इसलिए किया गया है कि अनेक योजनाओं से मुस्लिम समाज को मालामाल किया जाता रहें ? क्या इन अल्पसंख्यक संस्थाओं का देश में बढ़ती हुई जिहादी गतिविधियों के कारण बढ़ते सांप्रदायिक सौहार्द को नियंत्रित करने का कोई दायित्व नही? क्यों नही वह उन धार्मिक शिक्षाओं व विद्याओं पर अंकुश लगाने का प्रयास करके जिहादी विचारधारा के प्रचार व प्रसार को नियंत्रित करते ? आज अल्पसंख्यक मंत्रालय व उनसे जुड़ी सभी संस्थाओं को देश में बढते अपराध व अलगाववाद एवं आतंकवाद को ध्यान में रखकर कुछ सकारात्मक ठोस कार्य ऐसे भी करने चाहिये जिससे समाजिक भाईचारा बढें और सदियों पुरानी हिंदू–मुस्लिम सांप्रदायिक कटुता नष्ट हो सकें।

हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

इस्लाम

अनवर शेख, 'इस्लाम! अरब राष्ट्रीयता का साधन' में लिखते हैं– **''जो मुसलमान अरबी नहीं उन्हें इस्लाम ने इतनी हानि पहुँचाई है जो किसी भी दैवी आपत्ति ने नहीं पहुँचाई। फिर भी मुसलमानों को पक्का विश्वास है कि इस्लाम समानता और मानव प्रेम का प्रतीक है। मुहम्मद ने इस झूठ को बड़ी चतुरता से अटल सत्य के रूप में प्रस्तुत किया है। वास्तव में मुहम्मद ने सारी मानव जाति को दो भागों में बांट दिया है- एक ओर अरब और दूसरी ओर सब दूसरे। इस विभाजन के अनुसार अरब तो राज करने वाले हैं, और बाकी सब अरबी संस्कृति और साम्राज्यवाद द्वारा अरबों के अधीन रहने योग्य हैं।''**

वी. एस. नायपाल, बियोंड रिलीफ के अनुसार– **''इस्लाम मूल रूप से एक अरेबियाई मज़हब है। प्रत्येक मुसलमान, जोकि अरेबिसर का मूल निवासी नहीं है, इस्लाम में धर्मान्तरित है। इस्लाम में धर्मान्तरित व्यक्ति का वैश्विक दृष्टिकोण भी बदल जाता है। उसकी पवित्र भाषा अरबी हो जाती है, उसका अपना इतिहास सम्बन्धी दृष्टिकोण बदल जाता है। वह अपने इतिहास व संस्कृति को त्याग देता है और चाहे न चाहे, वह अरब इतिहास का एक हिस्सा बन जाता है। एक धर्मान्तरित का, जो कुछ भी अपना है, उसे उस सबको त्यागना पड़ता है।''**

इस्लाम की सफलता का कारण दूसरे देशों के मुसलमानों का बुद्धि नियंत्रण है, जिससे वे अपनी संस्कृति और धरोहर को ठुकराकर अरबों की महत्ता स्वीकार करने लगते हैं। **इस विचारधारा का आधार मुसलमानों के इस अंधविश्वास पर है कि मुहम्मद उन्हें स्वर्ग दिलवा सकते हैं।** परिणाम यह हुआ है कि हिन्दुस्तान, ईजिप्ट (मिस्र) और ईरान जो संसार के महान देश गिने जाते थे इस्लाम के प्रभाव से अपने गौरव को भूल गये हैं और अब संसार के हीन देशों में गिने जाते हैं।

जिस तरीके से इस्लाम का विस्तार हुआ, उसके अनुयायी पराजित और उत्पीड़ित पूर्वजों पर हुए अत्याचारों का बदला लेने और इस्लाम के राष्ट्रीय उद्देश्य को समझने का साहस कभी नहीं कर सकेंगे, **क्योंकि वे अत्यन्त बर्बरतापूर्वक कुचले जाने के बाद ही आतंक के सारे में मुसलमान बने हैं। इसके अतिरिक्त उनके बन्धन का भी पर्याप्त उपाय किया गया है। लोक में काफिरों की सम्पत्ति और उनकी औरतों को भोगने का अल्लाह का वादा और परलोक (जन्नत) में सुख-विलास के सभी साधन और यौन तृप्ति के लिये ७२ हूरों की व्यवस्था की गई है। ऐसी परिस्थिति और ऐसी व्यवस्था के आश्वासन का विश्वास मुसलमानों को कही डिगने नहीं देता। अगर किसी में वैचारिक प्रस्फुटन हुआ और इस्लाम के उद्देश्य और चरित्र की समझ से मन में खिन्नता आ गई, तो भी कोई मुसलमान धर्मत्याग का साहस नहीं करेगा, क्योंकि ऐसे मुसलमानों की हत्या करने का अल्लाह के रसूल का हुक्म है।**

आक्रामक संस्कृति होने के कारण इस्लाम प्रजातन्त्र विरोधी है। ऐसा इसलिए है कि इस्लाम में सरकार पर अधिकार अल्लाह का होता है। मनुष्य को उसके और मुहम्मद के बनाए नियमों को बिना कोई प्रश्न पूछे, निश्चय ही पालन करना चाहिए, भले ही वे कितने भी अप्रासंगिक और पुराने क्यों न हों

इस्लाम केवल पंथ शासित राज्य स्थापित कर सकता है। इस्लाम ने गुलामी प्रथा का संस्था का रूप दे दिया, स्त्रियों को अपमानित किया और अनेक देशों को धूल में मिला दिया। इस्लाम में सह–अस्तित्व के प्रत्येक सिद्धांत का अभाव है। इस्लाम में सभी मानवों को समदृष्टि से नहीं देखा जाता। इस्लाम में नैतिकता, आचार और न्याय के २ प्रकार के सिद्धांत हैं– एक मुसलमानों के लिए और दूसरा गैर–मुसलमानों के लिए। उदाहरण के लिए –वे अयोध्या में, जो हिन्दुओं का पवित्र नगर है, राम जन्मभूमि पर मस्जिद बनाना चाहते हैं, और दूसरी ओर कोई भी गैर–मुसलमान मक्का शहर में, जहाँ 'काबा' स्थित है, कभी प्रवेश भी नहीं कर सकता है और यदि उसके आसपास भी कहीं वह पाया गया तो उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।(कुरान ६:५,२८,२६)

इस्लामी मदरसे

मदरसे परम्परावादी हैं जो कुरान पर आधारित हैं और अपने को बदलना नहीं चाहते। यह मदरसे आधुनिक शिक्षा से छात्रों को वंचित रख, उनके लिए नए विचारों की तमाम खिड़कियाँ बन्द कर देते हैं। ये मदरसे न केवल सदियों पुरानी वैचारिक कूढ़–मगजी को ही पीढ़ी–दी–पीढ़ी रटते–रटाते आ रहे हैं, बल्कि अलग–अलग फिरकों के मदरस्से बचपन में ही छात्रों के मन में मुसलमानों के अलग–अलग फिरकों के बारे में वैमनस्य की जहरीली विभाजन–रेखायें भी खींच देते हैं। यह शिक्षा किधर से उपयोगी है? शिक्षा जोड़ने के लिए होती है या तोड़ने के लिए? अनुदारवाद और कट्टरपन की शुरुआत यहीं से होती है। –यथावत, १६,३१ जुलाई; १५

इस्लाम का प्रारम्भिक काल

सत्य क्या है? सत्य यह है कि इस्लाम और आतंकवाद का सम्बंध उसके संस्थापक के समय से ही है बल्कि यों कहा जाये कि संस्थापक द्वारा ही स्थापित है। अपने विरोधियों की चुन–चुन कर धोखे से हत्या कराना और सामूहिक रूप से ८०० यहूदियों को बन्दी बना कर कसाई की तरह कटवाना आतंकवाद नहीं है तो क्या प्रेमवाद है?

बू हुरैरह का कथन है–'' हम लोग मस्जिद में बैठे थे कि अल्लाह के रसूल पधारे। उन्होंने कहा कि यहूदियों के पास चलो। हम लोग चल पड़े.....पैगम्बर ने उनको बाहर बुलाया और कहा कि ऐ यहूदियों! इस्लाम स्वीकार कर लो, तभी सुरक्षित रह सकोगे। जब उनका उत्तर संतोषजनक नहीं मिला तब उन्होंने उनको चेतावनी देते हुए कहा–

शेष पृष्ठ 10 पर

अरबिंदो घोष जन्म १५ अगस्त, १८७२ मृत्यु ५ दिसंबर, १६५०

मोहन जोशी

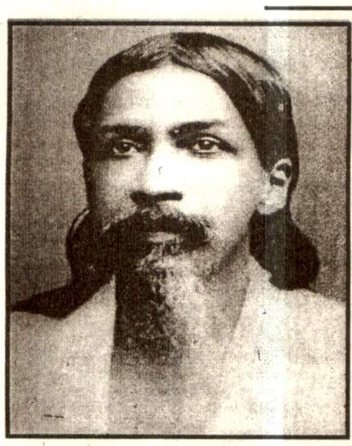

अरबिंदो घोष का जन्म बंगाल के कलकत्ता में एक सम्पन्न परिवार में १५ अगस्त, १८७२ को हुआ। उनके पिता का नाम डॉक्टर कृष्णधन घोष और माता का नाम स्वर्णलता देवी था। इनके पिता ने अरबिंदो को दो बड़े भाइयों के साथ दार्जिलिंग के एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के लिए भेज दिया। दो वर्ष बाद सात वर्ष की अवस्था में उनके पिता उन्हें इंग्लैंड ले गए। अरविंद को भारतीय एवं यूरोपीय दर्शन और संस्कृति का अच्छा ज्ञान था। कुछ लोग उन्हें भारत की ऋषि परम्परा (संत परम्परा) की नवीन कड़ी मानते हैं। श्री अरविंद का दावा है कि इस युग में भारत विश्व में एक रचनात्मक भूमिका निभा रहा है तथा भविष्य में भी निभायेगा। उनके दर्शन में जीवन के सभी पहलुओं का समावेश है। उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं, यथा संस्कृति, राष्ट्रवाद, राजनीति, समाजवाद आदि साहित्य, विशेषकर काव्य के क्षेत्र में उनकी कृतियां बहुचर्चित हुई हैं।

शिक्षा – अरबिंदो घोष की शिक्षा दार्जिलिंग में ईसाई कान्वेंट स्कूल में प्रारम्भ हुई और लड़कपन में ही उन्हें आगे की स्कूली शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेज दिया गया। इंग्लैंड में एक अंग्रेज परिवार में रहने और पढ़ने की व्यवस्था कर तीनों भाइयों को छोड़ कर वह वापस आ गये। इंग्लैंड में अरबिंदो घोष की भेंट बड़ौदा नरेश से हुई। बड़ौदा नरेश अरबिंदो की योग्यता देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अरबिंदो को अपना प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त कर लिया। अतः वह भारत लौट आये। अरबिंदो ने कुछ समय तक तो यह कार्य किया, किन्तु फिर अपनी स्वतंत्र विचारधारा के कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी। वह बड़ौदा कॉलेज में पहले प्रोफेसर बने और फिर बाद में वाइस प्रिंसिपल भी बने। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, जहाँ पर वे तीन आधुनिक यूरोपीय भाषाओं के कुशल ज्ञाता बन गए। १८६२ में भारत लौटने पर उन्होंने बड़ौदा, वर्तमान वडोदरा और कोलकाता में विभिन्न प्रशासनिक व प्राध्यापकीय पदों पर कार्य किया। बाद में उन्होंने अपनी देशज संस्कृति सहित भारतीय भाषाओं तथा योग का गहन अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।

दृष्टिकोण – श्री अरविंद के अनुसार वर्तमान मानसिकतायुक्त व्यक्ति, विकास का चरम लक्ष्य नहीं है। विकास का लक्ष्य मानसिकता का अतिक्रमण करके मनुष्य को वहाँ ले जाना है, जो संस्कृति, जन्म–मृत्यु और काल से परे हो। अतिमानसिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए आंतरिक तीव्र अभीप्सा, दैहिक, प्राणिक और मानसिक अंगों का दिव्य के प्रति पूर्ण समर्पण और दिव्य द्वारा उनका रूपांतरण नितांत आवश्यक है। यही श्री अरविंद के सर्वांगयोग की पूर्व भूमिका है। मानसिक से अतिमानसिक ज्ञान पर एकाएक नहीं पहुँचा जा सकता है। आध्यात्मिक विकास क्रमिक अभिव्यक्ति के तर्क पर आधारित है। अतः आत्मरूपान्तरण के सोपानों को पार करके ही अतिमानस अथवा दिव्यविज्ञान तक पहुँचा जा सकता है।

साहित्यिक कृतियाँ – श्री अरविंद के दर्शन को भी वेदान्त के परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है। स्वानुभूति के अतिरिक्त वेद, उपनिषद और पुराण वस्तुतः उनके दर्शन के स्रोत हैं। उनका दर्शन सर्वस्वीकृति का वर्णन है। उनके अनुसार विश्वातीत सत्य की स्वीकृति में ही विश्व और व्यक्ति की सत्यता भी अंतर्निहित है। वे दार्शनिक और विचारक होने के साथ–साथ योगी भी हैं। उनका दर्शन और योग जीवन की दिव्यता पर बल देता है। अरबिंदो घोष की वृहद और जटिल साहित्यिक कृतियों में दार्शनिक चिंतन, कविता, नाटक और अन्य लेख सम्मिलित हैं। उनकी कृतियाँ

शेष पृष्ठ 11 पर

अखंड भारत के सृष्टा योगेश्वर श्रीकृष्ण

समाजवादी डॉ. राम मनोहर लोहिया

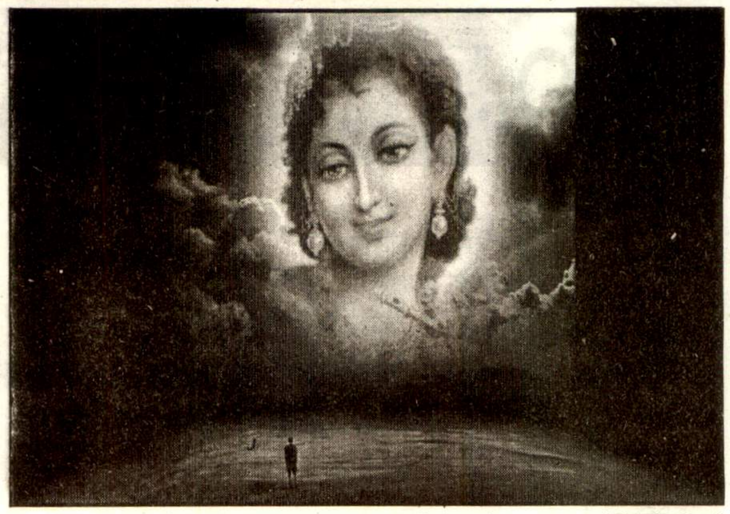

राजगिरी राज्य कंस–वध पर तिलमिला उठा होगा। कृष्ण ने पहले ही वार में मगध की पश्चिमी ताकत को खत्म–सा कर दिया। लेकिन अभी तो ताकत बहुत ज्यादा बटोरनी और बढ़ानी थी। यह तो सिर्फ आरम्भ था। आरम्भ अच्छा हुआ। सारे संसार को मालूम हो गया। लेकिन कृष्ण कोई बुद्धू थोड़े ही था, जो आरम्भ की लड़ाई को अन्त की बना देता। उसके पास अभी इतनी ताकत तो थी नहीं जो कंस के ससुर और पूरे हिन्दुस्तान की शक्ति से जूझ बैठता। वार करके, संसार को डंका सुना के कृष्ण भागे बड़ी दूर, द्वारका में। तभी से उसका नाम रणछोड़दास पड़ा। गुजरात में आज भी हजारों लोग, शायद एक लाख से भी अधिक लोग होंगे, जिनका नाम रणछोड़दास है। पहले मैं इस नाम पर हँसा करता था, मुसकराना तो कभी न छोडूँगा। यों, हिन्दुस्तान में और भी देवता हैं जिन्होंने अपना पराक्रम भाग कर दिखाया जैसे ज्ञानवापी के शिव ने। यह पुराना देश है। लड़ते–लड़ते थकी हड्डियों को भागने का अवसर मिलना चाहिए। लेकिन कृष्ण थकी पिंडलियों के कारण नहीं भागे। वह भागे जवानी की बढ़ती हड्डियों के कारण। अभी हड्डियों को बढ़ाने और फैलाने का मौका चाहिए था। कृष्ण की पहली लड़ाई तो आजकल की छापामार लड़ाई की तरह थी, वार करो और भागो। अफसोस यही है कि कुछ भक्त लोग भागने ही में मजा लेते हैं।

कृष्ण मगध धुरी का नाश करके कुरु धुरी की क्यों प्रतिष्ठा करनी चाही? इसका एक उत्तर तो साफ है, भारतीय जागरण का बाहुल्य उस समय उत्तर और पश्चिम में था, जो राजगिरि और पटना से बहुत दूर पड़ जाता था। उसके अलावा मगध धुरी पुरानी बन चुकी थी, शक्तिशाली थी, किन्तु उसका फैलाव संकुचित था। कुरु धुरी नई थी और कृष्ण इसकी शक्ति और इसके फैलाव दोनों का ही सर्वशक्तिसम्पन्न निर्माता था। मगध धुरी को जिस तरह चाहता शायद न मोड़ सकता, कुरु को अपनी इच्छा के अनुसार मोड़ और फैला सकता था। सारे देश को बाँधना जो था उसे!!

कृष्ण त्रिकालदर्शी था। उसने देख लिया होगा कि उत्तर–पश्चिम में आगे चलकर यूनानियों, हूणों, पठानों, मुगलों आदि के आक्रमण होंगे। इसलिए भारतीय एकता की धुरी का केन्द्र वहीं रचना चाहिए, जो इन आक्रमणों का सशक्त मुकाबला कर सके। लेकिन त्रिकालदर्शी क्यों न देख पाया कि इन विदेशी आक्रमणों के पहले ही देशी मगध धुरी बदला चुकायेगी और सैकड़ों वर्ष तक भारत पर अपना प्रभुत्व कायम करेगी। और आक्रमण के समय तक कृष्ण की भूमि के नजदीक यानि कन्नौज और उज्जैन तक खिसक चुकी होगी, किन्तु अशक्त अवस्था में। त्रिकालदर्शी ने देखा शायद यह सब कुछ हो, लेकिन कुछ न कर सका हो!!

वह हमेशा के लिए अपने देशवासियों को कैसे ज्ञानी और साधु दोनों बनाता। वह तो केवल रास्ता दिखा सकता था। रास्ते में भी शायद त्रुटि थी। त्रिकालदर्शी को यह भी देखना चाहिए था कि उसके रास्ते पर ज्ञानी ही नहीं, अनाड़ी भी चलेंगे और वे कितना भारी नुकसान उठायेंगे। राम के रास्ते चल कर अनाड़ी का भी अधिक नहीं बिगड़ता, चाहे बनना भी कम होता हो।

अनाड़ी ने कुरु–पांचाल संधि का क्या किया? कुरु धुरी की आधारशिला थी कुरु–पांचाल संधि, आसपास के इन दोनों इलाकों का व्रज समान एक कायम करना था। सो कृष्ण ने उन लीलाओं के द्वारा किया, जिससे पांचाली का विवाह अर्जुन से हो गया। पांचाली भी अद्भुत नारी थी। कैसे कुरु सभा को उत्तर देने के लिए ललकारती है कि जो आदमी अपने को हरा चुका है, क्या दूसरे को दांव पर रखने की उसमें स्वतन्त्र सत्ता है? कृष्ण के कुरु धुरी के और भी रहस्य रहे होंगे। साफ है कि राम आदर्शवादी एकरूप एकत्व के निर्माता और प्रतीक थे, उसी तरह जरासंध भौतिकवादी एकत्व का निर्माण था। आजकल कुछ लोग कृष्ण और जरासंध युद्ध को आदर्शवाद–भौतिकवाद का युद्ध मानने लगे हैं। वह सही जंचता है, किन्तु है अधूरा विवेचन। जरासंध भौतिकवादी एकरूप एकत्व का इच्छुक था। बाद में मगधीय मौर्य और गुप्त राज्यों में कुछ हद तक इसी भौतिकवादी एकरूप एकत्व का प्रादुर्भाव हुआ और उसी के अनुरूप बौद्ध धर्म का। कृष्ण आदर्शवादी बहुरूप एकत्व का निर्माता था। जहाँ तक मुझे मालूम है, अभी तक भारत का निर्माण भौतिकवादी बहुरूप के आधार पर कभी नहीं हुआ।

चिर चमत्कार तो तब होगा जब आदर्शवाद और भौतिकवाद के मिले–जुले बहुरूप एकत्व के आधार पर भारत का निर्माण होगा। अभी तक तो कृष्ण का प्रयास ही सर्वाधिक माननीय मालूम होता है, चाहे अनुकरणीय राम का एक रूप एकत्व ही हो। कृष्ण की बहुरूपता में वह त्रिकाल जीवन है जो औरों में नहीं है। बेचारे कृष्ण ने इतनी निःस्वार्थ मेहनत की, लेकिन जन–मन में राम ही आगे रहा है। सिर्फ बंगाल में ही मुर्दे–'बोल हरिः हरि बोल' के उच्चारण से–अपनी आखिरी यात्रा पर निकाले जाते हैं, नहीं तो कुछ दक्षिण को छोड़ कर सारे भारत में हिन्दू मुर्दे 'राम नाम सत्य है' के साथ ही ले जाते हैं। बंगाल के इतना तो नहीं, फिर भी उड़ीसा और असम में कृष्ण में कौन उन्नीस, कौन बीस है?? सबसे आश्चर्य की बात है। स्वयं ब्रज के चारों ओर की भूमि के लोग भी वहाँ एक–दूसरे को 'जैरामजी' से नमस्ते करते हैं। सड़क चलते अनजान लोगों को भी यह 'जैयरामजी' बड़ा मीठा लगता है।

शायद एक कारण यह भी हो। राम त्रेता के मीठे, शांत और सुसंस्कृत युग का देव है। राम गम्य है। कृष्ण अगम्य है। कृष्ण ने इतनी अधिक मेहनत की कि उसके वंशज उसे अपने अपना अन्तिम आदर्श बनाने से घबराते हैं। यदि बनाते भी हैं तो उसके मित्रभेद और कूटनीति की नकल करते हैं। उसका अथक प्रयास उनके लिए असाध्य रहता है। इसीलिए कृष्ण हिन्दुस्तान में कर्म का देव न बन सका। कृष्ण ने कर्म राम से ज्यादा किए हैं, कितनी संधियाँ और विग्रह, प्रदेशों के आपसी संबंधों के धागे उसे पलटने पड़ते थे। यह बड़ी मेहनत और बड़ा पराक्रम था। इसके वह मतलब नहीं कि प्रदेशों के आपसी सम्बन्धों में कृष्ण नीति अब भी चलाई जाये। कृष्ण जो पूर्व–पश्चिम की एकता दे गया, उसी के साथ नीति का औचित्य भी खत्म हो गया।

बच गया कृष्ण का मन और उसकी वाणी। और बच गया राम का कर्म। अभी तक हिन्दुस्तानी इन दोनों का समन्वय नहीं कर पाये हैं। करें तो राम के कर्म में भी परिवर्तन आये। राम रोऊ है। इतना कि मर्यादा भंग होती है। कृष्ण कभी रोता नहीं। आँखें जरूर डबडबाती हैं उसकी कुछ मौकों पर!! जैसे जब किसी नारी को दुष्ट लोग नंगा करने की कोशिश करते हैं!!...

कैसे मन और वाणी थे उस कृष्ण के। अब भी जो चाहे वे, उसकी वाणी और मुरली की तान सुन कर रस विभोर हो सकते हैं और अपने चमड़े के बाहर उछल सकते हैं। साथ ही कर्म–संग के त्याग, सुख–दुख, शीत–ऊष्ण, जय–अजय के समत्व योग और सब भूतों में एक अव्यक्त भाव का सुरीला दर्शन उसकी वाणी सुन सकते हैं। संसार में एक कृष्ण ही हुआ जिसने दर्शन को गीत बनाया। मैं समझता हूँ कि नारी अगर कहीं नर के बराबर हुई है तो सिर्फ ब्रज और कान्हा के पास। शायद इसीलिए आज भी हिन्दुस्तान की औरतें वृन्दावन में जमुना के किनारे पेड़ में रूमाल जितनी चुनड़ी बाँधने का अभिनय करती हैं। क्योंकि कौन औरत नहीं जानती कि दुष्ट जनों द्वारा चीरहरण के समय कृष्ण ही उनकी चुनड़ी अनन्त करेगा!!! उनकी, पुण्य आदि की कामना के पीछे भी सुषुप्त याद है। सरयू और गंगा–कर्तव्य की नदियाँ हैं कभी–कभी कठोर होकर अन्यायी हो जाती हैं और नुकसान कर बैठती हैं। जमुना तथा दूसरी जमुनान्मुखी नदियाँ रस की नदियाँ हैं। रस में मिलन है, कलह मिटाना है, लेकिन हास्य भी है, जो गिरावट के मनुष्य को निकम्मा बना देता है। इसी रसभरी इतराती यमुना के किनारे कृष्ण ने अपनी लीला की, लेकिन कुरु धुरी का केन्द्र उसने गंगा के किनारे ही बसाया। बाद में हिन्दुस्तान के कुछ राज्य जमुना के किनारे बने और अब एक भी चल रही है। जमुना तुम कभी बदलेगी? आखिर गंगा में गिरती हो, कभी इस भूमि पर रसमय कर्तव्य का उदय होगा?

अखण्डित भारत दिवस १३ अगस्त १६४७ ई०

हमारा देश अति प्राचीन राष्ट्र है। विश्व में आबादी के हिसाब से यह सबसे बड़ा देश था जबकि इसके पास विश्व की केवल २.२% ही भूमि है किन्तु इसकी आबादी १६.७% है। भूमि के हिसाब से जनसंख्या १७–१८ करोड़ ही होनी चाहिए तभी मौसम ठीक रहेगा। प्रदूषण नहीं होगा और देश का चहुंमुखी विकास हो सकता है। ऐसे में जनसंख्या १०–१२ गुना ज्यादा है जिसके कारण पानी, बिजली, यातायात में जाम, बीमारी, कुपोषण, शिक्षा–संस्थाओं का अभाव, झुग्गी/झोपड़ियों का फैलता जाल, अपराध, बलात्कार आदि कारणों से देश की स्थिति सामान्य नहीं कही जा सकती है। भारत में केरल में ६०० वर्ष पूर्व पहली मस्जिद बनी और केरल में ही २५० वर्ष पूर्व पहला चर्च बना। दोनों हिन्दू राजाओं की अति उदारता का कुफल देश ने १६४७ में देखा और भविष्य में भी गम्भीर दुष्परिणाम देखने को मिलेंगे क्योंकि हिन्दू से सत्ता छीनने के लिए मुस्लिम, ईसाई निश्चित रूप से एक मंच पर आ जाएंगे। हिन्दू को वीर सावरकर और भाई परमानन्द का अनुयायी बनना होगा अन्यथा उसका विनाश दिखाई दे रहा है क्योंकि देश के १६४७ में हुए बंटवारे से नेहरू, गांधी जैसे विश्व स्तर के अदूरदर्शी नेताओं ने कुछ नहीं सीखा और भोली जनता अब भी उन्हें महान मानती है।

देश के कई हिन्दू संगठन १४ अगस्त को अखण्ड भारत दिवस मनाते हैं। १४ अगस्त को पश्चिम तथा पूर्व में दो कट्टर इस्लामी राष्ट्र भारत की ३१२४ लाख वर्ग मील भूमि पर अस्तित्व में आ गए थे और उन क्षेत्रों में रहने वाले करोड़ों हिन्दू एक झटके में ही द्वितीय क्षेणी के नागरिक घोषित कर दिए गए थे । उनका क्या दोष था? उन्होंने नेहरू–गांधी पर जरूरत से ज्यादा विश्वास किया! गांधी जी ने कहा था कि वे तथा नेहरू भी तो हिन्दू हैं अतः वे उनका ख्याल करेंगे। उनका आश्वासन कतई पूरा नहीं हुआ। दुर्भाग्य हिन्दू का है। स्मरण रहे कि नेहरू तो मुगलवंशी फैजुल्ला खान का पोता है जिसने कत्ले आम से बचने के लिए अपना नाम गंगाधर रख लिया था। अतः १३ अगस्त को ही अखण्डित भारत दिवस मनाया जाना चाहिए।

राम अवतार यादव, बुलन्दशहर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री राजनाथ सिंह जी,
माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार
नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-११०००१

विषय : मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को असंवैधानिक घोषित करने की मांग।

महोदय,

मीडिया में छपे समाचार से निम्नलिखित तथ्य उजागर हुए हैं, जो मुसलमान स्त्रियों के प्रति हो रहे अन्याय, दमन और क्रूरता के प्रसंग में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, जिससे उन्हें तीन तलाक की क्रूरता से बचाया जा सकेः—

१. मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड एक असंवैधानिक संस्था है, जिसे कोई विधिक या मजहबी स्वीकृति प्राप्त नहीं है, और उसे मुस्लिम समुदाय के मामले पर बोलने का कोई हक नहीं है ।

२. बोर्ड को स्थापना कांग्रेस ने कराई और कट्टरवादी मुसलमान नेताओं को धन दिया तथा उनसे यह संस्था बनवाई, ऐसा कांग्रेस ने मुस्लिम वोट बैंक बनाने के लिए किया।

इसलिए निवेदन है कि उक्त संस्था को गैर—कानूनी घोषित करके, उसका पंजीयन रद्द कर दिया जाए। उच्चतम न्यायालय में उसे तीन तलाक, हलाला और समान नागरिक संहिता पर कुछ कहने से रोक दिया जाए।

इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,
श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय :- अलगाववादी नेताओं की सुरक्षा वापस ली जाये।

महोदय,

श्रीनगर से श्री नवीन नवाज ने समाचार पत्रों में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर किए हैं, जो निम्नलिखित हैं।

१. गला फाड़ कर अलगाववादी नारे देने वाले लोग मुट्ठी भर हैं।

२. जम्मू—कश्मीर की बड़ी आबादी को न तो पाकिस्तान पसंद है और न ही आतंकवादियों की दलील।

३. घाटी के अंदर आग लगाने की कोशिशें लगातार होती रही हैं।

४. २२ में से सिर्फ ५ जिलों के कुछ लोग ही अलगाववाद के प्रभाव में हैं।

५. समस्या की जड़ विशुद्ध इस्लामिक कट्टरवाद में है।

६. पथराव की घटनाएँ श्रीनगर, सोपोर के अलावा अन्य जिलों के प्रमुख कस्बों में सिमटी हैं। वहां भी पैसे देकर बच्चों से पत्थरबाजी करायी जाती है।

७. राजनीति इसे जिन्दा किए हुए है, जिनमें नेशनल कान्फ्रेंस, पीडीपी और हुरियत कान्फ्रेंस के नेता सम्मिलित हैं।

कश्मीर के कांग्रेस, हुरियत कान्फ्रेंस, नेशनल कान्फ्रेंस और पीडीपी के राजनीतिबाज नेता अलगाववाद को हवा देने में पीछे नहीं रहे हैं और जिन सुरक्षाकर्मियों पर पत्थर फिकवाते हैं, उन्हीं से अपने जीवन की रक्षा करवाते हैं, साथ—साथ प्राकृतिक आपदाओं के दौरान उनसे सेवाएँ लेते हैं और आतंकवादियों और पत्थरबाजों से वार्ता का राग अलापते हैं। इस संबंध में हमें जो सुझाव मिले हैं और मिल रहे हैं, वे निम्नलिखित हैं।

१. घाटी से भारतीय सेना केवल सीमा पर तैनात कर दी जाए और अन्य स्थानों से हटा ली जाए।

२. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, सीमा सुरक्षा बल और पुलिस को बैरकों में भेज दिया जाए। राजनीतिबाजों की सुरक्षा वापस ले ली जाए।

३. राजनीतिबाजों और उपर्युक्त पार्टियों के आतंकवादियों के हिमायतियों को पत्थरबाजों और आतंकवादियों से वार्ता की छूट दे दी जाए।

४. विश्वास है कि इन उपर्युक्त उपायों से आतंकवादी और पत्थरबाजों सहित कश्मीर के अलगावादी नेताओं को अपने प्रलापों का पूरा ईनाम मिल जाएगा। विश्वास है कि निर्णय लेने की कृपा करेंगे और देशभक्त सैनिकों को हुतात्मा बनने से बचाने का पुण्य लाभ लेंगे।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,
श्री रामनाथ कोविंद जी,
माननीय भारत के राष्ट्रपति
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

विषय : तमिलनाडु, जम्मू-कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल की हिन्दू विरोधी एवं राष्ट्रविरोधी प्रदेश सरकारों को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग।

महोदय,

आपको ज्ञात हो कि भारत के तमिलनाडु, जम्मू—कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल राज्यों में राष्ट्रविरोधी एवं हिन्दू विरोधी गातिविधियां बढ़ती जा रही हैं। आई.एस व भारत विरोधी आंतकी गिरोहों की गतिविधि लगातार बढ़ रही है। परन्तु इन राज्यों की राज्य सरकारें ऐसे राष्ट्रविरोधी तत्वों पर कार्रवाई करने के बदले उलटा उन्हीं तत्वों को बढ़ावा दे रही है। राष्ट्रहित व हिन्दू हित में निम्नलिखित निर्णय लेने की कृपा करें:—

१. तमिलनाडु, जम्मू—कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल की राज्य सरकारों को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये।

२. तमिलनाडू, जम्मू—कश्मीर, केरल, पश्चिम बंगाल सहित देश के अन्य भागों में आई.एस व भारत विरोधी अलगाववादियों की गतिविधियों पर तत्काल अंकुश लगया जाये।

३. आई.एस. व अलगाववादियों को समर्थन व सहयोग देने वाले लोगों पर कड़ी कार्रवाई की जाये।

४. अलगाववाद को सहयोग देने वाले व फंडिग करने वाले लोगों पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा दर्ज किया जाये।

५. सेना व अर्द्धसैनिक बलों को आतंकवाद को कुचलने की पूरी छूट दी जाये।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 1 का

चीन ने बढ़ाई भारत-अमेरिका.....

अपने नियंत्रण में लेने की है। हालांकि चीन ने इन खबरों को तवज्जो नहीं देने की कोशिश की कि जिबौती इसका प्रथम सैन्य अड्डा है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता जेंग शुंग ने संवाददाताओं से कहा कि जिबौती अड्डा एक सहायक बेस है जो चीनी सैनिकों को उस वक्त मदद पहुंचाएगा जब वे अदन की खाड़ी में समुद्री लूट रोधी अभियान चलाएंगे, मानवीय सहायता कार्य करेंगे अन्य अंतरराष्ट्रीय दायित्वों को निभाएंगे। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक चीनी सैन्य कर्मियों को लेकर जहाज जिबौती स्थित सैन्य अड्डे पर एक सहायक आधार बनाने के लिए दक्षिण चीन के गुआंदोंग प्रांत से रवाना हुए। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी पीएलए नेवी के कमांडर शेन जिनलोंग ने जिबौती में अड्डा बनाने का आदेश पढ़ा और जहाजी बेड़े को सैन्य झंडा दिखा कर रवाना किया। पीएलए नेवी ने बताया कि पीएलए का जिबौती अड्डा दोनों देशों की दोस्ताना बातचीत में लिया गया फैसला है। यह कहा गया है कि यह सैन्य अड्डा अफ्रीका और पश्चिम एशिया में समुद्री बचाव अभियान शांति सहायता और मानवीय सहायता में चीन को मदद पहुंचाएगा। यह सैन्य अड्डा विदेशों में सैन्य सहयोग, संयुक्त सैन्य अभ्यास विदेश स्थित चीनियों को बचाने और संयुक्त रूप से अंतरराष्ट्रीय सामरिक जल मार्गों की सुरक्षा में भी मदद पहुंचाएगा। इस सैन्य अड्डे का निर्माण कार्य २०११ से चल रहा था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारत सरकार से मांग की है कि अमेरिका, रूस आदि देशों के साथ मिलकर साम्यवादी चीन की विस्तारवादी गतिविधियों को शीघ्र रोका जाये।

शेष पृष्ठ 8 का

हिन्दू अस्तित्व, संकट और.....

"तुमका जानना चाहिए, यह पृथ्वी अल्लाह और उसके रसूल की है, मैं यहाँ से तुम लोगों को खदेड़ कर हीं दम लूंगा।" (स. मु.४३६३)

हदीस अल—बुखारी खण्ड ८ में इस प्रकार के कुछ प्रमाण दिये गये हैं, उनमें से ३ यहाँ प्रस्तुत हैं—

"पैगम्बर ने उन लोगों के हाथों और पैरों को काट दिया जो कि यूरेना कबीले के थे, और उनको मरने के लिए खून बहते छोड़ दिया।" (७६७,पृ.५२२)

"जब यूकिल के लोगों ने अपराध किए तो पैगम्बर ने उन्हें कैद करवा लिया। उनके हाथों और पैरों को काट दिया गया, उनकी आँखें लोहे की तपती—लाल सरियाँओं से फोड़ दी गईं और उन्हें अल—हर्रा में फैंक दिया गया। जब उन्होंने पीने के लिए पानी मांगा तो वह उन्हें देने से मना कर दिया गया और वे प्यासे ही मर गए।" (७६६,पृ.५२१)

"वे जो मुहम्मद के विरुद्ध लड़े, 'उसने' उनके हाथ—पैर काट दिए और वे खून बहने से मर गए।" (७६५,पृ.५२०)

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 5 का **कृष्ण जन्माष्टमी पर व्रत.....**

होकर व्रत का संकल्प करें।

- केले के खंभे, आम अथवा अशोक के पत्ते आदि से घर का द्वार सजाएँ।
- दरवाजे पर मंगल कलश स्थापित करें। सर्वप्रथम कलश की पूजा करें।
- कलश के साथ पंच देवों की पूजा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, लक्ष्मी एवं सरस्वती जी की पूजा करें। इसी कलश को प्रतीक मानकर क्रमशः वासुदेव–देवकी, नन्द, यशोदा, बलदेव, रोहिणी माँ एवं रोहिणी नक्षत्र की पूजा करें।
- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः इस मंत्र से पूजन करके नव वस्त्र अलंकार से सुसज्जित करके भगवान को सजे हुए हिंडोले में प्रतिष्ठित करें।
- धूप–दीप, अन्न रहित नैवेद्य तथा प्रसूति के समय सेवन होने वाले सुस्वादु मिष्ठान्न, विभिन्न फलों, पुष्पों, नारियल, छुआरे, अनार, पंजीरी तथा मेवे से बने प्रसाद भगवान को अर्पित करें। इस प्रकार भगवान बाल मुकुन्द के मनोहर स्वरूप का ध्यान करें।
- आधी रात में भगवान का जन्मोत्सव मनाएँ जैसे कि घर में किसी बालक ने जन्म लिया हो।
- मांगलिक गीत, स्तुति, वाद्य यंत्रों के साथ गाएँ।
- रात्रि के बारह बजे गर्भ से जन्म लेने के प्रतिस्वरूप खीरा काटकर भगवान का जन्म कराएँ। जन्मोत्सव मनाएँ।
- बालस्वरूप भगवान श्रीकृष्ण जी को पंचामृत से स्नान कराएँ।
- केसर, कस्तूरीयुक्त चंदन का लेपन करें।
- सुन्दर वस्त्र, आभूषण धारण कराएँ। पुष्प व रत्न मालाओं से अलंकृत करें, मधुर व्यंजनों का भोग अर्पत करें।
- जन्मोत्सव के पश्चात कपूर आदि से प्रज्ज्वलित कर समवेत स्वर से भगवान की आरती स्तुति करें।

शेष पृष्ठ 1 का **तमिलनाडु जम्मू-कश्मीर, केरल........**

राष्ट्रविरोधी सरकारों को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की है। तमिलनाडु प्रदेशाध्यक्ष के. राजशेखर ने कहा कि तमिलनाडु में आई.एस व हिन्दू विरोधी शाक्तियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। परन्तु प्रदेश सरकार कोई कार्यवाही नहीं कर रही है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का **अरबिंदो घोष जन्म १५ अगस्त.......**

हैं–एस्सेज आन गीता (१६२८), द लाइफ डिवाइन (१६४०), कलेक्टेड पोयम्स एण्ड प्लेज (१६४२), द सिंथेसिस ऑफ योगा (१६४८), द ह्यूमन साइकिल (१६४६), द आईडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी (१६४६), द लीजेंड एण्ड ए सिंबल (१६५०), आन द वेदा (१६५६), द फाउन्डेशन ऑफ इंडियन कल्चर।

राजनीतिक गतिविधियाँ – अरबिंदो के लिए १६०२ से १६१० के वर्ष हलचल भरे थे, क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश शासन से भारत को मुक्त कराने का बीड़ा उठाया था। बड़ौदा कॉलेज की नौकरी छोड़कर वह कोलकाता चले गए और कोलकाता के 'नेशनल कॉलेज' के प्रिंसीपल बने। इस समय तक उन्होंने 'सादा जीवन और उच्च विचार'' जीवन अपना लिया। उन पर रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के साहित्य का बहुत गहन प्रभाव हुआ। सन् १६०५ में लार्ड कर्जन ने पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल के रूप में बंगाल के दो टुकड़े कर दिए ताकि हिन्दू और मुसलमानों में फूट पड़ सके। इस बंग–भंग के कारण बंगाल में जन–जन में असंतोष फैल गया।

अरबिंदो घोष – रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अरबिंदो घोष ने इस जन आंदोलन का नेतृत्व किया। इस आंदोलन के विषय में लोकमान्य तिलक ने कहा–बंगाल पर किया गया अंग्रेजों का प्रहार सम्पूर्ण राष्ट्र पर प्रहार है। अरबिंदो घोष ने राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने तथा अंग्रेजों का विरोध प्रदर्शित करने के लिए पत्र–पत्रिकाओं में विचारोत्तेजक और प्रभावशाली लेख लिखे। उनके लेखों से जन–जन में जागृति आ गई। ब्रिटिश सरकार उनके इस क्रियाकलापों से चिंतित हो गई। सरकार ने 'अलीपुर बम कांड' के अंतर्गत उन्हें जेल भेज दिया। जेल में उन्हें योग पर चिंतन करने का समय मिला। उन्होंने सन् १६०७ में राष्ट्रीयता के साथ भारत को 'भारत माता' के रूप में वर्णित और प्रतिष्ठित किया। उन्होंने बंगाल में 'क्रांतिकारी दल' का संगठन किया और उसका प्रचार और प्रसार करने को अनेक शाखाएँ खोली और वे स्वयं उसके प्रधान संचालक बने रहे। खुदीराम बोस और कनाईलाल दत्त, यह क्रांतिकारी उनके संगठन के ही क्रांतिकारी थे। इन गतिविधियों के कारण अरबिंदो घोष अधिक दिनों तक सरकार की नजरों से छिपे नहीं रह पाये और उन्हें फिर से जेल जाना पड़ा। वह अपनी राजनीतिक गतिविधियों और क्रान्तिकारी साहित्यिक प्रयासों के लिए १६०८ में बंदी बना लिए गए। १६०६ से १६०६ तक सिर्फ तीन वर्ष प्रत्यक्ष राजनीति में रहे। इसी में देश भर के लोगों के प्रिय बन गए। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस लिखते हैं–जब मैं १६१३ में कलकत्ता आया, अरबिंदो तब तक किंवदंती पुरुष हो चुके थे। जिस आनन्द तथा उत्साह के साथ लोग उनकी चर्चा करते शायद ही किसी की वैसे करते। दो वर्ष के बाद ब्रिटिश भारत से भागकर उन्होंने दक्षिण–पूर्वी भारत में फ्रांसीसी उपनिवेश पांडिचेरी में शरण ली, जहाँ उन्होंने अपना शेष जीवन पूरी तरह से अपने दर्शन को विकसित करने में लगा दिया। उन्होंने वहाँ पर आध्यात्मिक विकास के अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में एक आश्रम की स्थापना की जिसकी ओर विश्व भर के छात्र आकर्षित हुए। अरबिंदो घोष ने बंगाल में क्रांतिकारी दल का संगठन किया और उसका प्रचार और प्रसार करने को अनेक शाखाएँ खोली और वे स्वयं उसके प्रधान संचालक बने रहे। खुदीराम बोस और कनाईलाल दत्त, उनके संगठन के ही क्रांतिकारी थे। भारत के स्वतंत्र होते ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का आकलन करते हुए श्री अरबिंदो ने भविष्यवाणी की थी–भारत एक बार फिर एशिया का नेता होकर समस्त भूमंडल को एकात्मा की मूलभूत श्रृंखला में आबद्ध करने का महान कार्य सम्पन्न करेगा। भारत की आध्यात्मिकता यूरोप और अमेरिका में प्रवेश कर रही है। इसकी गति थमेगी नहीं, दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाएगी। वर्तमान विपदाओं के बीच लोगों की आँखें आशा के साथ अधिकाधिक उसकी ओर मुड़ रही हैं और लोग केवल शास्त्रों का ही नहीं, बल्कि उसकी आन्तरिक और आध्यात्मिक साधना का अधिकाधिक आश्रय ग्रहण कर रहे हैं। मृत्यु पांडिचेरी आने के बाद वे सांसारिक कार्यों से अलग होकर आत्मा की खोज में लग गए। पांडिचेरी आने के बाद अरबिंदो घोष अंत तक योगाभ्यास करते रहे और उन्हें परमात्मा से साक्षात्कार की अनुभूति हुई। उनके आध्यात्मिक अनुभवों से असंख्य लोग प्रभावित हुए। उनका दृढ़ विश्वास था कि संसार के दुःख का निवारण केवल आत्मा के विकास से ही हो सकता है जिसकी प्राप्ति केवल योग द्वारा ही संभव है। वे मानते थे कि योग से ही नई चेतना आ सकती है। अरबिंदो घोष की मृत्यु ५ दिसंबर, १६५० में पांडिचेरी में हुई।

शेष पृष्ठ 6 का **आपराधिक मानहानि प्रकरण.......**

कांग्रेस नेता सन २०१४ में मुम्बई से प्रकाशित श्री रतन शारदा द्वारा रचित 'सीक्रेटस ऑफ आर. एस. ए.–डिमिस्टीफाइंग द संघ' ग्रंथ पढ़ सकें जो अंग्रेजी के २७० पृष्ठों में है तब उनको अपनी अज्ञानता पर स्वयं तरस आएगा। सन १६६४ का वर्ष आते आते नेहरू जी को संघ का राष्ट्र को समर्पित छवि का आभास हो गया था। ये वही नेहरू जी थे जिन्होंने २६ जनवरी को अमृतसर में, गांधी जी की हत्या के मात्र एक दिन पूर्व सार्वजनिक रूप से संघ को धमकी देते हुए कहा था कि वे इस नेस्तनाबूद कर देंगे। और गांधी जी की मृत्यु के बाद उन्हें संयोग से इसके विरूद्ध प्रतिशोध का अवसर भी मिल गया। सोनिया गांधी व राहुल गांधी कदाचित आज भी उसी दुःस्वप्न से ग्रस्त हैं।

दिनांक 16 अगस्त से 22 अगस्त 2017 तक

पर्व	तिथि	दिन
मदनलाल धिंगरा पुण्यतिथि	17 अगस्त	वीरवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

अखिल भारत हिन्दू महासभा के द्वारा नई दिल्ली स्थित जंतर-मंतर पर विशाल धरना-प्रदर्शन की चित्रावली

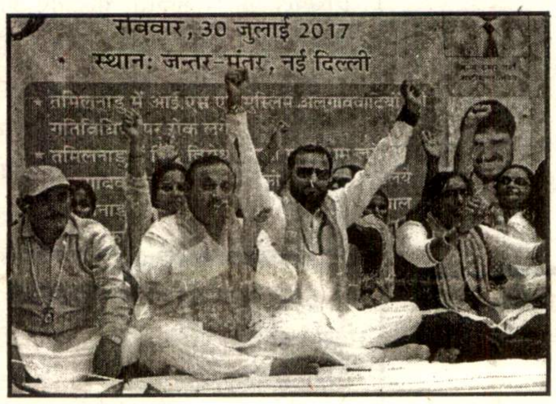

कबिरा खड़ा बजार में

भोजन जानवरों जैसा, सपना मोनो रेल का

हमारे प्रधानमंत्री देश में मोनो रेल का सपना देख रहे हैं। स्टेशनों पर सफाई के लिए पूरे देश में हो हल्ला मचा हुआ है। गंदगी की सफाई की बात हो रही है, गोष्ठियों में चर्चा हो रही है। लेकिन रेलवे व स्टेशनों पर जहां सबसे ज्यादा सफाई, शुद्धता होनी चाहिए। वहां ही सबसे ज्यादा गंदगी है। सफर करने वालों को जानवरों को खाने लायक खाना परोसा जा रहा है। इस पर नियंत्रण पाने में सरकारी मशीनरी पूरी तरह फेल है। रेलवे स्टेशनों पर जो खाने–पीने की चीजें परोसी जा रही हैं, वो इंसानी इस्तेमाल के लायक ही नहीं हैं। यह किसी शिकायती पत्र की पंक्तियां नहीं हैं, बल्कि भारत के नियंत्र्क एवं महालेखपरीक्षक कैग की रिपोर्ट है, जो बीते दिनों संसद के पटल पर रखी गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि ट्रेनों और स्टेशनों पर परोसी जा रही चीजें प्रदूषित हैं। जो दाल, भात, सब्जियां, सूप, परांठे जैसी गर्मा–गर्म भोजन सामग्री बेहद गंदगी में बनाई जाती हैं, और डिब्बाबंद व बोतलबंद खाद्य, पेय पदार्थो को उनके सुरक्षित इस्तेमाल के लिए तयशुदा टाइम पीरियड के गुजर जाने के बावजूद बेचा जा रहा है। रेल नीर के अलावा अनाधिकृत ब्रैंड की पानी की बोतलें बेची जा रही हैं। कैग व रेलवे की संयुक्त टीम ने ७४ स्टेशनों और ८० ट्रेनों का मुआयना किया और पाया कि रेलवे परिसरों और ट्रेनों में साफ-सफाई का बिलकुल ध्यान नहीं रखा जा रहा। भारतीय रेल प्रशासन जरूरी बेस किचन, ऑटोमैटिक वेंडिंग मशीनें जैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध कराने की दिशा में प्रभावशाली कदम उठाने में नाकाम रहा, यह बात रिपोर्ट में साफ–साफ लिखी है, साथ ही इंगित है कि सात रेलवे जोन्स में कैटरिंग सर्विस के लिए प्रावधानों का ब्लूप्रिंट ही नहीं तैयार किया गया। इस ताजातरीन रिपोर्ट से रेलवे की बदहाली का एक नमूना सामने आ गया है, जिससे भारतीय रेल को विश्वस्तरीय बनाने के दावों की हकीकत समझी जा सकती है। स्टेशनों के निजीकरण की बात हो या बुलेट ट्रेन चलाने की योजना, हर बात को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है, मानो रेलवे का उद्धार इन से ही होगा। यह बात समझना होगा कि खामियों को स्वीकारने और उन्हें जमीनी स्तर पर दूर करने की कोशिशों से ही असल मायनों में रेलवे का भला होगा। रोजाना लाखों लोग रेल का सफर करते हैं और इस दौरान उनकी जिंदगी रेल मंत्रालय की जिम्मेदारी होनी चाहिए। लेकिन खराब भोजन देकर इस जिम्मेदारी को न केवल टाला जा रहा है, बल्कि यात्रियों की सेहत के साथ खिलवाड़ भी हो रहा है। लगभग दो साल पहले मध्यप्रदेश में सड़ी–गली, फंफूदी लगी सब्जियों को पकाकर ट्रेन में परोसने का मामला सामने आया था। अन्य बहुत से स्थानों पर भी ऐसा होता होगा, जो कभी जानकारी में आए ही नहीं। जरा से मुनाफे या बचत के लिए इंसान की जिंदगी को दांव पर लगाना कैसे उचित कहा जा सकता है। अपने एक रेल बजट में सुरेश प्रभु ने कहा था कि आईआरसीटीसी चरणबद्ध तरीके से कैटरिंग सर्विस मैनेज करने लगेगी। रेलवे कैटरिंग पॉलिसी २०१७ आईआरसीटीसी को रेलवे बोर्ड की सलाह पर भोजन का मेन्यू और कीमत भी तय करने में सक्षम होगी। सामाजिक दायित्व को पूरा करने के लिए नई नीति में सभी स्टेशनों पर ३३ प्रतिशत स्टॉल्स महिलाओं को आवंटित किए जाएंगे। बेशक फरवरी में बनी इस नीति में कई अच्छी लगने वाली बातें थीं, लेकिन उनका अच्छा प्रभाव तभी पड़ता, जब ये पूरी तरह से क्रियान्वित होतीं। नीति में उल्लिखित बातों में कितनों को अमली जामा पहनाया गया है, यह अलग रिपोर्ट का विषय है। फिलहाल यह बात सामने आ गई है कि खराब भोजन पर यात्रियों की जो नाराजगी थी, वह जायज थी और अब तक उसमें कोई सुधार नहीं हो पाया है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 09 अगस्त से 15 अगस्त 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।